राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

द्वारा विकसित

उच्च माध्यमिक (+2 स्तरीय) संशोधित पाठ्यक्रम

कक्षा-XI

कला (Arts)

सत्र- 2007-2009

(पूर्णतः सी०बी०एस०ई० के पाठ्यक्रम के समरूप)

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना
(उच्च माध्यमिक प्रभाग)

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

द्वारा विकसित

उच्च माध्यमिक (+ 2 स्तरीय) का संशोधित पाठ्यक्रम

पूर्णतः सी० बी० एस० ई० के पाठ्यक्रम के समरूप (भाषा के अतिरिक्त)

कक्षा–XI

कला (Arts)

सत्र– 2007-09

प्रकाशक

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति

(उच्च माध्यमिक प्रभाग, पटना)

Sole Printer and Sole Distributor

KANAK®

कनक प्रकाशन

प्रधान कार्यालयः– 'रघुवंशम्', पटना– 800 023

सेल्स कार्यालयः– शॉप नं० 15, ग्राउंड फ्लोर, जनपाड़ा हाउस, खजांची रोड, पटना–800 004 # **Mob:** 9304105921, 9304034728.

- पाठ्यक्रम विकास :

  राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस० सी० ई० आर० टी०), बिहार
  महेन्द्रू, पटना-800 006

- © **प्रकाशक :**

  बिहार विद्यालय परीक्षा समिति
  (उच्च माध्यमिक प्रभाग)
  बुद्ध मार्ग, पटना-1

- **कम्पोजिंग, इनर डिजाइनिंग एवं कवर डिजाइनिंग :**

  कनक प्रकाशन
  प्रधान कार्यालय- 'रघुवंशम्', पटना- 800 023
  सेल्स कार्यालय- शॉप नं० 15, ग्राउंड फ्लोर,
  जनपाड़ा हाउस, खजांची रोड, पटना-800 004

- **प्रथम संशोधित संस्करण :** सितम्बर, 2007

- **मुद्रित प्रतियाँ :** 5,000 (पांच हजार प्रतियाँ)

- **मूल्य :** अठारह रूपये मात्र /-

- **मुद्रण सौजन्य : कनक प्रकाशन** (प्रेस- बिहार ऑफसेट, बिड़ला मंदिर रोड, पटना।)

पाठ्यक्रम का कोई भी अंश **बिहार विद्यालय परीक्षा समिति** की पूर्वानुमति के बिना मुद्रित या प्रकाशित करना दण्डनीय अपराध होगा।

बिहार का +2 स्तरीय (कक्षा-XI) का संशोधित पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2006 के आलोक में बिहार का यह नवीन संशोधित पाठ्यक्रम (2007) भी 'शिक्षा' के बारे में एक विशिष्ट दृष्टिकोण पर आधारित है। इसके अनुसार, 'शिक्षा का मतलब बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का, जिन्दा होने का सही-सही अर्थ समझ सकें, अपनी समस्त योग्यताओं का समुचित विकास कर सकें, अपने जीवन का मकसद तय कर सकें और उसे प्राप्त करने हेतु यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कर सकें और साथ ही इस बात को भी समझ सकें कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा ही करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है।''

बिहार के इंटर के वर्त्तमान पाठ्यक्रम एवं सी०बी०एस०ई० के वर्त्तमान पाठ्यक्रम के आधार पर निम्नांकित विषयों की पढ़ाई +2 स्तरीय शैक्षिक संस्थानों में करने का निर्णय मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार द्वारा लिया गया है–

i. भाषा समूह–

1. हिन्दी	2. उर्दू	3. अंग्रेजी
4. संस्कृत	5. बांग्ला	6. मैथिली
7. मगही	8. अरबी	9. फारसी
10. भोजपुरी	11. पालि	12. प्राकृत

उक्त भाषाओं में से प्रत्येक विद्यार्थी को 11वीं एवं 12वीं कक्षा में **अनिवार्यतः दो भाषाएँ** पढ़नी होंगी। यदि कोई विद्यार्थी चाहे तो उक्त भाषा समूह में से कोई तीसरी भाषा भी ले सकता है। लेकिन यह तीसरी भाषा उसके ऐच्छिक विषय की सूची में रहेगी। भाषा समूह के उक्त विषयों के पाठ्यक्रम सभी पढ़नेवाले विद्यार्थियों के लिए एक जैसे होंगे। ज्ञातव्य है कि पूर्व में राज्य में विज्ञान, कला एवं वाणिज्य के लिए अलग-अलग पढ़ाई होती थी, अतः भाषाओं के पाठ्यक्रम भी अलग-अलग होते थे। इस व्यवस्था को नये सत्र (जुलाई 2007) से समाप्त किया जा रहा है।

ii. वैकल्पिक विषय समूह–

1. गणित	2. भौतिक विज्ञान	3. रसायन शास्त्र
4. जीव विज्ञान	5. कम्प्यूटर सायंस	6. इतिहास
7. राजनीति शास्त्र	8. भूगोल	9. अर्थशास्त्र
10. समाजशास्त्र	11. मनोविज्ञान	12. दर्शनशास्त्र
13. गृह विज्ञान	14. संगीत	15. बिजनेस स्टडीज
16. एकाउन्टेंसी	17. इंटरप्रेनरशिप	18. मल्टीमीडिया एवं वेब टेक्नोलॉजी
19. योग एवं शारीरिक शिक्षा		

उक्त विषयों में से शिक्षार्थी को अनिवार्यतः **तीन विषयों** का अध्ययन करना होगा।

इसके अतिरिक्त शिक्षार्थी चाहें तो उक्त दोनों विषय (भाषा एवं वैकल्पिक) समूह में से **किसी एक विषय को ऐच्छिक विषय** के रूप में पढ़ सकते हैं। अच्छा होगा कि ऐच्छिक विषय के रूप में शिक्षार्थी किसी एक कार्य आधारित व व्यावसायिक विषय का अध्ययन करें।

पाठ्यपुस्तकें : नवीन पाठ्यक्रम के आधार पर राज्य में पहली बार 11वीं एवं 12वीं कक्षा के लिए विषयवार पाठ्यपुस्तकों का निर्धारण किया गया है। ये पाठ्यपुस्तकें बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा मुद्रित कर उपलब्ध कराई जा रही हैं। भाषाओं के अतिरिक्त सभी वैकल्पिक विषयों की पाठ्यपुस्तकें वही होंगी जिनका प्रकाशन एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली एवं बी.टी.बी.सी., बिहार द्वारा 11-12वीं कक्षा के लिए किया गया है।

12वीं की बोर्ड परीक्षा : वर्ष 2009 में होनेवाली 12वीं की बोर्ड परीक्षा से संबद्ध सूचनाएँ एवं मूल्यांकन पद्धति के संबंध में बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना सूचनायें प्रेषित करेगा।

– राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार, पटना।

अनुक्रमणिका

विवरण			पृष्ठ संख्या
समूह-i		अनिवार्य पत्र (भाषा)	
	1.	हिन्दी (Hindi)	05 - 06
	2.	अंग्रेजी (English)	07 - 09
समूह-ii		वैकल्पिक पत्र (विज्ञान संकाय में)	
	1.	इतिहास (History)	10 - 12
	2.	राजनीतिशास्त्र (Political Science)	13 - 16
	3.	भूगोल (Geography)	17 - 21
	4.	अर्थशास्त्र (Economics)	22 - 25
	5.	समाजशास्त्र (Sociology)	26 - 28
	7.	मनोविज्ञान (Psychology)	29 - 31
	8.	दर्शनशास्त्र (Philosophy)	32 - 33
	9.	गृह-विज्ञान (Home-Science)	34 - 36
	10.	गणित (Mathematics)	37 - 39

नोट– अन्य भाषाओं हेतु **'भाषा'** की **'पाठ्यक्रम पुस्तिका'** देखें।

भाषा (हिन्दी)

Class-XI

प्रस्तावना–

भाषा के बिना यह जीवन-जगत् एक अर्थ में अंधकारमय है। इसे हम देखकर भी जान-समझ नहीं पाते, अनुभव नहीं कर पाते। भाषा एक महती शक्ति और प्रकाश है। वह साधन और माध्यम है जिसके द्वारा हम जीवन-जगत् को जान-समझ पाते हैं, अनुभव कर पाते हैं; तथा प्राप्त अनुभव और ज्ञान को व्यक्त कर पाते हैं। भाषा के द्वारा ही हम विचार करते हैं और अपने विचारों और अनुभवों को प्रकट कर पाते हैं। इसके सहारे ही हम अपने अनुभव, विचार, संवेदन, इच्छाएँ और मनोभाव दूसरों तक सम्प्रेषित कर पाते हैं। यह सम्प्रेषण का एकमात्र विश्वसनीय आधारभूत माध्यम है। भाषा-क्षमता अर्जित करते हुए ही हम मानसिक-बौद्धिक विकास को प्राप्त करते हैं जो अन्य प्रकार की प्रगति और विकास का मूल है। इस रूप में भाषा की शिक्षा अन्य तमाम विषयों की शिक्षा का आधार और सहयोगी है। स्वभावत: शिक्षण की लम्बी प्रक्रिया में भाषा-शिक्षण और भाषा-परिष्कार का कार्य निरंतरता की अपेक्षा रखता है।

भारतीय संविधान द्वारा राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हिन्दी व्यापक जन की भाषा है। एक हजार वर्षों से भी अधिक समय से विकसित होती आयी हिन्दी भाषा और उसका वैविध्यपूर्ण व्यापक एवं विस्तृत साहित्य विविध भाषा-भाषियों, अनेक जातियों, धर्मों-सम्प्रदायों, लोक संस्कृतियों और विचारधाराओं द्वारा सेवित-संवहित होता आया है। इसमें हजार वर्षों से व्यापक भारतीय जनता की आशा-आकांक्षा, हर्ष-विषाद, संकल्प-विकल्प और स्वप्न-यथार्थ की अबाध अभिव्यक्ति होती आयी है। हिन्दी भाषा-साहित्य के सुदीर्घ इतिहास में अनेकानेक प्रवृत्तियाँ और परम्पराएँ बनीं और विलीन हुईं। वे कभी दिखीं तो कभी अंतर्धान होकर आगे पुन: परिवर्तित रूपों में प्रकट हुईं। हिन्दी भाषा और साहित्य को पुराने युगों में कभी राजसत्ता और धर्म जैसी प्रभावशाली शक्ति का संरक्षण मिला हो अथवा नहीं; लोक संरक्षण इसे सदैव प्राप्त रहा। इसी लोकसंरक्षण के बल पर वह अपनी शक्ति, प्रभाव, क्षमता और विस्तार को आगे बढ़ाते हुए स्वाधीनता संघर्ष का, अहिन्दी भाषियों द्वारा भी सहर्ष स्वीकृत, प्रमुख माध्यम बनी। इसकी क्षमताओं और लोकप्रियता को ही दृष्टिपथ में रखकर संविधान निर्माताओं ने इसे राष्ट्रभाषा के रूप में सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठित किया। आज यह भाषा राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय और वैश्विक परिदृश्य में भारत राष्ट्र के महान् गौरव के अनुरूप अपनी पहचान और प्रतिष्ठा अर्जित कर रही है। यह सरकारी-गैरसरकारी गतिविधियों, सरोकारों और व्यवहारों में बहुविध रूपों और छवियों में अपनाई जाकर अपनी प्रगति और विकास के नये आयामों को तय करती दिखाई पड़ रही है। यह आधुनिक जीवन और वैश्विक व्यवहारों-सरोकारों में उद्योग-धंधे, व्यापार-वाणिज्य, राजनीति-अर्थनीति, युद्ध और शांति, ज्ञान-विज्ञान-प्रौद्योगिकी, दण्ड-न्याय, शिक्षा-संस्कृति-कला-शिल्प-साहित्य-धर्म आदि तमाम धरातलों पर कुशलतापूर्वक वर्धमान और विकसनशील है। इन व्यापक व्यवहारों और बहुव्याप्तियों के अनुरूप हिन्दी भाषा में आज नई-नई प्रयुक्तियाँ प्रकट हो रही हैं, नये-नये पारिभाषिक शब्द निर्मित हो रहे हैं और तद्नुरूप व्याकरण में भी नये परिवर्तन दिखाई पड़ रहे हैं।

हिन्दी का पाठ्यक्रम

पत्र : एक **समय : 3 घंटे** **कुल अंक : 100**

इस वर्ग में **'दिगंत भाग-1'** नाम की एक पुस्तक होगी जिसमें **12 गद्य पाठ, 12 पद्य पाठ** एवं **3 पाठ द्रुतवाचन** के लिए होंगे। गद्य पाठों के चयन में हिन्दी के गद्य-रूपों की विविधता, विकास-क्रम का तो ध्यान रखना होगा ही, साथ ही हिन्दी से इतर दूसरी भाषाओं की भी श्रेष्ठ रचनाओं से छात्रों का परिचय जरूरी होगा। पाठों के चयन में इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि छात्र अपनी साहित्यिक विरासत से परिचय प्राप्त करें और साथ ही आधुनिक दृष्टिकोण का भी विकास कर सकें। **पद्य खंड में हिन्दी के 12 कवियों की रचनाएँ हिन्दी कविता** के विकास-क्रम को ध्यान में रखकर दी जा सकेंगी। यह विकास-क्रम प्राचीनता और आधुनिकता का संतुलित बोध करा सकेगा। इन दो खंडों के अतिरिक्त इस पुस्तक में एक तीसरा खंड द्रुतवाचन का होगा जिसमें **एशिया की चुनिंदा तीन कहानियाँ** शामिल की जाएँगी। इस खंड को छात्र बिना **अतिरिक्त बोझ के पढ़ सकेंगे।**

गद्य खंड :

1. प्रेमचंद – पूस की रात (कहानी)
2. रामचंद्र शुक्ल – कविता की परख (वैचारिक निबंध)
3. कुमार गंधर्व – भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर (व्यक्तिपरक निबंध)
4. विष्णुभट गोडसे वरसईकर – आँखों देखा गदर (संस्मरण)
5. सत्यजित राय – चलचित्र (फिल्म पर निबंध)
6. भोला पासवान शास्त्री – मेरी वियतनाम यात्रा (यात्रा-वृत्तांत)
7. कृष्णा सोबती – सिक्का बदल गया (कहानी)
8. फणीश्वरनाथ रेणु – उतरी स्वप्न परी : हरी क्रांति (रिपोर्ताज)
9. हरिशंकर परसाई – एक दीक्षांत भाषण (व्यंग्य)
10. ओदोलेन स्मेकल – सूर्य (सांस्कृतिक निबंध)

11. मेहरून्निसा परवेज - भोगे हुए दिन (कहानी)
12. कृष्ण कुमार - गांव के बच्चों की शिक्षा

पद्य खंड :

1. विद्यापति - चानन भेल विषम सर रे, सरस बसंत समय भल पाओल
2. कबीर - संतो देखत जग बौराना, हो बलैया कब देखौंगी तोहि
3. मीराबाई - जो तुम तोड़ो पिया, मैं गिरधर के घर जाऊँ
4. सहजोबाई - मुकुट लटक अटकी मन माही, राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ
5. भारतेन्दु हरिश्चंद्र - भारत-दुर्दशा
6. मैथिलीशरण गुप्त - झंकार
7. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' - तोड़ती पत्थर
8. नागार्जुन - बहुत दिनों के बाद
9. त्रिलोचन - गालिब (सॉनेट)
10. केदारनाथ सिंह - जगरनाथ
11. नरेश सक्सेना - पृथ्वी
12. अरुण कमल - मातृभूमि

द्रुतवाचन खंड : एशियाई देशों की तीन कहानियाँ।

हिन्दी

इस वर्ग में **'व्याकरण, रचना और साहित्य-रूप'** की एक स्वतंत्र पुस्तक होगी जो वर्ग- **XI** और **XII** दोनों के लिए होगी। इस पुस्तक में के व्याकरण एवं रचना खंड में संज्ञा, सर्वनाम, कारक, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, अव्यय, काल, क्रिया, निपात आदि व्याकरणिक प्रकरणों के अब तक सीखे जाने हुए तथ्यों के सुव्यवस्थित पाठ एवं अभ्यास वर्ग-**XI** के लिए होंगे।

साहित्य-रूप वाले खंड में साहित्यशास्त्र, काव्य-रूप और साहित्यिक विधाओं के संबंध में आधारभूत और प्रामाणिक जानकारी होगी जो आकार में लघु होने के बावजूद शब्द-शक्ति, रस, ध्वनि, छंद, लय, अलंकार के अतिरिक्त महाकाव्य, खंडकाव्य, चम्पूकाव्य, मुक्तक, प्रगीत तथा गद्य की विविध विधाओं एवं रचना-रूपों, जैसे- निबंध एवं उसके प्रभेदों के साथ-साथ उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, शब्दचित्र, जीवनी, संस्मरण तथा नाटक एवं एकांकी विषयक तात्त्विक बोध छात्रों को कराने में समर्थ होगी।

पूरक पाठ्य पुस्तक : पूरक पाठ्य-पुस्तक के रूप में **'हिन्दी भाषा और साहित्य की कथा'** नाम की एक पुस्तक होगी। यह पुस्तक कक्षा- **XI** एवं कक्षा- **XII** दोनों के लिए होगी। इस पुस्तक में हिन्दी भाषा और साहित्य का संक्षिप्त इतिहास होगा। इस इतिहास में हिन्दी साहित्य के विभिन्न युगों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि, प्रमुख रचनाओं एवं रचनाकारों के ब्यौरे होंगे। इसका विशेष रूप से ध्यान रखना होगा कि ऐतिहासिक विकास की निरंतरता का समुचित बोध हो सके। कक्षा- **XI** के छात्र इस पुस्तक के उन्हीं हिस्सों को पढ़ेंगे जिनमें आदिकाल से लेकर 19वीं शती तक का साहित्यिक इतिहास होगा।

नोट- अंक-वितरण की जानकारी हेतु भाषा की प्रकाशित पाठ्यक्रम की पुस्तिका देखें।

<u>हिन्दी (अनुमोदित पुस्तकों के नाम)</u>

(i) दिगंत (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

(ii) हिन्दी भाषा और साहित्य की कथा (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

(iii) हिन्दी व्याकरण (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

ENGLISH LANGUAGE

Class-XI

1. INTRODUCTION :

Language, the chief function of which is communication, is the most distinctive trait of human society. The very acquisition of knowledge depends on language. Language is a marker of our identity and is closely associated with power in society. We can hardly do without language in any walk of life.

The knowledge of English is especially very important in the age of globalization we are living in. The richness of this language and the existing stock of wide knowledge in English make it immensely useful. It is a window on the world and an access to the growing store of knowledge in science, technology and humanities.

We have to acknowledge, whether we like it or not, that English plays an important role in the domains of education, administration, business and political relations, judiciary, industry etc and is, therefore, a passport to social mobility, higher education and better job opportunities.

The mushroom growth of so called 'English medium' or public shools in every nook and corner of the state and the people's preference to such schools is a testimony to the growing importance and need of English which has to be addressed in the curriculum / syllabus of the state. The very principle of equality entails that English should not remain associated only with the rich, elite or the upper middle class. Even a rural child of the underprivileged has an equal right to gain a sufficiently good level of proficiency in it so that he should not suffer discrimination for lack of it.

With the changes in the aims and objectives of education, redesigning curricular framework and thereof revision of syllabus becomes a compulsion. This compulsion is the positive strength of a live education system. Unfortunately, this has not been the case with these education system in Bihar. The last revision took place about 13 years ago and hardly any significant attempt was made in the these years to update the syllabus according to the needs and requirements of the learners or the society.

Even the last revision that took place 13 years ago lacked in a very essential element, i.e., socio-economic, cultural, political context or what can be termed as 'Bihari input'. It was exclusively based on the recommendations of the NEP 1986.

The neglect of 'Bihari input' in the syllabus has very unhappy consequences. The learners failed to find any substantial link between the life around them and what was being taught in the classroom. Rote learning thus got hold over understanding.

The guidelines of NCF 2005 framed in the light of the well known report "Learning without Burden" has shifted the focus from the teachers to the learners, confining the former to the role of facilitator only. The NCF 2005 recognises leaerners as the constructor of knowledge and sees multilingualism as a strength in the classroom. It prescribes five guiding principles. These include / imply :

- Connecting knowledge to life outside the school.
- Ensuring that learning be shifted away from rote methods.
- Enriching the curriculum to provide for over all development of the child rather than remain textbook centric, and
- Making examinations more flexible and integrated with classroom life.
- Nurturing identify of the learners within democratic policy.

The change in attitude to teaching and learning necessitates the revision of the State Curriculum Framework and thereof the syllabus of English language. It is high time we recognised the importance of creating socio-cultural contexts that would encourage children to participate actively in understanding and create appropriate communicative practices. The Bihari inputs and the appropriate use of mother-tongue in the classroom will accelerate the pace of learning and thus can help the learners overcome their fer of English. It's time we removed the notion that English is difficult to learn.

The present syllabus owes much to the NCF 2005 and the NCERT syllabus developed in the light of NCF 2005. The attempt has been to accommodate the NCERT syllabus as far as practicable in the context of Bihar. This has entailed, to some extent, the omission, modification and even shifting of many of the learning objectives, learning strategies and learning outcomes to another class.

It is important to state that, unlike the NCERT syllabus which is only stage wise, the proposed state syllabus is developed both stage-wise and class-wise.

One Paper **Three Hours** **Marks : 100**

Syllabus : Class–XI

Sl. No.	Teaching Items	Method	Objective	Resources / Textual support
1.	Live / Recorded presentation on variety of topics.	Oral-written exercises	Develop Listening, Speaking and comprehension skills.	Audio records should be accompanied with the text prints to enable the teachers to read out of there is no audio aids.
2.	Group discussions on familiar topics / contemporary issues	Oral exercises	Developing Argumentative and Speaking skills.	Examples : Familiar topic : "Can literature help us win bread and butter ?" Contemporary issue : "Is death sentence viol-ation of human rights ?"
3.	Preparing notes and writing summary of a given passage	Writing exercises	Identifying cen-tral / main point and supporting details etc. and perceiving ove-rall meaning and organisation.	The texts should deal with socio-political and cultural issues along with the principles enshrined in the constitution.
4.	Comprehension of unseen factual / imaginative pass-ages (Short and long question-answer items)	Reading with under-standing and Writing exercises	Developing the skills of reaso-ning, drawing inferences.	....
5.	Reading of tales / short stories / short plays	Reading and Writing exerc-ises	Reading with understanding and imbibing virtues.	Bihari writers, Indian writers, Commonwealth writers and native writers of English
6.	Reading of informative pieces / essays	Reading with under-standing and Writing exercises	Read with understanding and respond effectively in writing.	On Environment, Economics, Sports, Science, Health and Hygiene. Adolescence, Human values and Human rights, Cultural diversity and unity etc.
7.	Reading poems for enjoyment and understanding	Oral and Written exercises	Enjoying and understanding poems and imbibing human values and / or encountering truth.	World fame poets (both native and non native poets of English), Indian poets, Bihari Poets.
8.	Free Composition on familiar / contemporary issues	Writing exercises	Communicative skills in writing	Notices, memorandum, formal and informal letters, applica-tion etc.
9.	Various registers of English	Oral / written exercises	Build communicative competences in various registers of English.	Support with standard pieces of writing.
10.	Translation from mother tongue into English	Writing exercises	Ability to translate from mother tongue into English and vice versa.	Wide ranging topics covering different aspects of life including great person-alities.
11.	Grammatical items and structures : (a) The use of different Tense forms	Oral and Writing exercises	Listening, Speaking, Reading and Writing skills.	Sufficient examples followed by extensive exercises based on or related to text.

Sl. No.	Teaching Items	Method	Objective	Resources / Textual support
	for different kinds of narration (e.g. media commen-taries, reports, progra-mmes, etc.) (b) Reported speech in extended texts. (c) The use of Passive forms in scientific and innovative writing. (d) Converting one kind of sentence / clause into a different kind of structures as well as other items to exemplify stylistic variations in different discourses. (e) Modal auxiliaries – Uses based on semantic consi-derations. (f) Phrases & idioms (g) Analysis.			

Note : For marking distribution, please see the Language's Syllabi

BOOKS RECOMMENDED :

1. **The Rainbow (Part - I) :** Developed by SCERT, Bihar & Printed by B.T.B.C., Bihar)
2. **The Story of English :** Developed by SCERT, Bihar & Printed by B.T.B.C., Bihar)
3. **English Grammar :** Developed by SCERT, Bihar & Printed by B.T.B.C., Bihar)

इतिहास

Class-XI

औचित्य :

ये वर्ग शिक्षार्थियों को यह जानकारी देंगे कि ऐतिहासिक ज्ञान ऐसे परिचर्चाओं से विकसित होता है, अत: इसके स्त्रोतों को सावधानी से पढ़कर निष्कर्ष निकाला जाय। शिक्षार्थियों को अब तक भारतीय इतिहास की जानकारी कक्षा-VI से VII तक एक सिलसिलेवार ढंग से दी गई, लेकिन **कक्षा-XI** एवं **कक्षा-XII** में इतिहास के पाठ्यक्रम का आधार इस प्रकार नहीं होगा बल्कि इसके पाठ्यक्रम का केन्द्रबिन्दु कुछे विशेष तथ्यों पर केन्द्रित रहेगा, जिसके बारे में गहन अवलोकन किया जायेगा। इस तरह के तथ्यों पर विशेष परिचर्चा कर ऐसी आशा की जाती है कि यह शिक्षार्थियों को न सिर्फ इतिहास की घटनाओं एवं प्रक्रियाओं की जानकारी देगा बल्कि इतिहास को जानने की, खोज करने की उत्सुकता भी प्रदान करेगा।

उद्देश्य :

उच्च माध्यमिक वर्गों के इतिहास के पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य इस बात पर जोर देना होगा कि शिक्षार्थी समझ सकें कि इतिहास एक विश्लेषणात्मक विषय है, एक जानकारी की प्रक्रिया है, अतीत को जानने का एक माध्यम है, न कि सिर्फ तथ्यों का मात्र संकलन। यह पाठ्यक्रम उन्हें किस प्रकार विविध प्रकार के साक्ष्यों को इतिहासकार चुनकर, एकत्रित कर और किस प्रकार इतिहास लिखते हैं और किस प्रकार उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हैं, उन्हें समझने में भी सहायता प्रदान करेगा।

''यह पाठ्यक्रम उन्हें विभिन्न परिस्थितियों में विकास के विभिन्न चरणों को संबद्ध / तुलना करने की क्षमता प्रदान करेगा और विभिन्न प्रकार के सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत सामाजिक रिश्तों को समझने की अंर्तदृष्टि प्रदान करेगा।

कक्षा-XI का पाठ्यक्रम विश्व इतिहास के कुछ मुख्य विषय पर केन्द्रित होगा। इसके विषयों का चयन इस प्रकार से किया गया है कि-

1. विभिन्न चरणों में कुछ महत्वपूर्ण विकास, यथा- राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथ्यों पर केन्द्रित होगा।

2. इसके वृत्तांत सिर्फ शहरीकरण, औद्योगीकरण एवं आधुनिकीकरण के विकास की कहानी नहीं कहते बल्कि विस्थापन एवं पाश्वर्ती प्रक्रियाओं की जानकारी भी देते हैं।

इन विषयों की जानकारी के द्वारा शिक्षार्थी एक वृहत् ऐतिहासिक प्रक्रिया एवं विशेष परिचर्चा से अवगत हो पायेंगे।

कक्षा-XI के प्रत्येक विषय में समाविष्ट है।

(a) विषयों की वृहत जानकारी विशेष परिचर्चा के अंतर्गत। **(b)** तथ्यों के आलोचनात्मक तर्क-वितर्क की शुरूआत।

पाठ्यक्रम संरचना

पत्र : एक **समय : 3 घंटे** **कुल अंक : 100**

	अंक
विश्व इतिहास का परिचय-	
खण्ड-A : प्रारम्भिक समाज • परिचय • समय के आरंभ काल से • प्रारंभिक शहर	15
खण्ड-B : साम्राज्य • परिचय • तीन महाद्वीपों में फैला साम्राज्य • मध्य इस्लामिक क्षेत्र • यायावर साम्राज्य	25
खण्ड- C: बदलती परम्परायें • परिचय • तीन वर्ग • बदलती सांस्कृतिक परम्परायें • संस्कृतियों में टकराव	25
खण्ड- D : आधुनिकीकरण के रास्ते • परिचय • औद्योगिक क्रांति • स्थानीय लोगों का विस्थापन • आधुनिकीकरण के रास्ते	25
• (मानचित्र कार्य)	10
कुल	100

विश्व इतिहास के विषय-वस्तु

	विषय-वस्तु	पीरियड	उद्देश्य
खण्ड (A)	**प्रारम्भिक समाज–** **समय के आरंभकाल से–** केन्द्रबिन्दु– अफ्रीका, यूरोप 1500 B.C. तक (a) मानव के उद्‌भव के संदर्भ में मान्यतायें (b) प्रारंभिक समाज वर्तमान समय के शिकारी एवं खाद्य-संग्राहक समाज पर परिचर्चा।	08 06 **14**	• शिक्षार्थी को मानवीय उद्‌विकास के पुर्नसंरचना से परिचित कराना। • वर्तमान काल के शिकारी एवं खाद्य-संग्राहक वर्ग के अनुभव क्या प्रारंभिक समाज को समझने में सहायक हो सकते हैं, इस संदर्भ में परिचर्चा।
	प्रारम्भिक शहर– केन्द्रबिन्दु– इराक, तृतीय मिलेनियम B.C. तक (a) शहरों का विकास (b) प्रारंभिक समाज की प्रकृति, लेखन कला के प्रयोग पर परिचर्चा।	12	• शिक्षार्थी को प्रारंभिक शहरी समाज से परिचित कराना। • लेखन-कला की महत्ता क्या सभ्यता की शुरूआत की ओर इशारा करती है, इस पर परिचर्चा।
खण्ड (B)	**साम्राज्य–** **परिचय, तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य** केन्द्र बिन्दु– रोमन साम्राज्य– 27 B.C. to AD 600 तक (a) राजनीति उद्‌विकास (b) आर्थिक विस्तार (c) धर्म (d) परावर्ती पुराकाल। दासता रूपी संस्था पर परिचर्चा।	06 12	• शिक्षार्थी को विश्व के महान्‌ साम्राज्यों से परिचित कराना। • उस समय की अर्थव्यवस्था में दासता क्या एक महत्वपूर्ण तथ्य था। इस पर परिचर्चा।
	मध्य इस्लामिक क्षेत्र– मुख्य रूप से– 7वीं से 12वीं सदी तक (a) राजव्यवस्था (b) अर्थव्यवस्था (c) संस्कृति क्रांतियों के स्वरूप पर परिचर्चा।	12	• शिक्षार्थी अफ्रीकी-एशियन प्रक्षेत्र में इस्लामिक साम्राज्य के अभ्युदय से परिचित कराना और समाज तथा अर्थव्यवस्था पर उसके प्रभाव को दर्शाना। • इस तथ्य को समझना कि इन धर्मों में क्रांति का क्या अर्थ रहा और इसका अनुभव कैसे किया गया।
	यायावर साम्राज्य– मुख्य बिन्दु– मंगोल, 13वीं एवं 14वीं शताब्दी (a) यायावरी की प्रकृति (b) साम्राज्य का निर्माण (c) अन्य राज्यों के साथ विजय एवं संबंध। यायावरी समाज एवं साम्राज्य संगठन पर परिचर्चा।	10	• शिक्षार्थी को विविध प्रकार के यायावर समाज एवं उनकी संस्थाओं से अवगत कराना। • क्या यायावर समाज में राज्य रूपी संस्था का निर्माण संभव है, इस पर परिचर्चा।
खण्ड (C)	**बदलती परम्पराएँ :** **परिचय, तीन वर्ग–** मुख्य विषय-वस्तु– पश्चिमी यूरोप, 9वीं एवं 16वीं शताब्दी (a) सामंतवादी समाज एवं अर्थव्यवस्था (b) राज्य का निर्माण (c) चर्च एवं समाज सामंतवाद के अवसान पर परिचर्चा।	06 12	• शिक्षार्थी को तत्कालीन समाज एवं अर्थव्यवस्था की प्रकृति एवं उनमें होनेवाली परिवर्तनों से परिचय कराना। • यह दिखाना कैसे सामंतवाद के अवसान की परिचर्चा संक्रमण प्रक्रिया को समझने में सहायक है। • उस समय के बुद्धिजीवी आयामों की खोज करना।
	बदलती सांस्कृतिक परम्परायें– विशेष रूप से यूरोप पर, 14वीं एवं 17वीं शताब्दी (a) भाषा और कला, आये नए विचार एवं नये आयाम। (b) पूर्ववर्ती विचारों के साथ संबंध (c) पश्चिमी एशिया का योगदान परिचर्चा– क्या यूरोपियन पुनर्जागरण प्रयोजन सही है।	14	• शिक्षार्थी को उस समय के कलाओं एवं इमारतों से परिचय कराना। • पुनर्जागरण के इतर परिचर्चा।
	संस्कृतियों में टकराव– विशेषकर अमेरिकियों पर, 15वीं एवं 18वीं सदी (a) यूरोपवासियों की खोज एवं यात्राएँ (b) सोने की खोज, दासता, आक्रमण, पारगमन (c) स्थानीय लोग एवं उनकी संस्कृति, अरावाक, एजटेक, इनकस (d) स्थानापन्न का इतिहास, दास व्यापार पर परिचर्चा।	12	• बदलती हुई यूरोपियन अर्थव्यवस्था, जिसके कारण यात्राएँ की गई, उस पर परिचर्चा। • स्थानीय लोगों पर इन अभियानों का प्रभाव। • दास– व्यापार की प्रकृति तथा इनके खोजों पर परिचर्चा।

	विषय-वस्तु	पीरियड	उद्देश्य
खण्ड **(D)**	**आधुनिकीकरण के रास्ते** **परिचय, स्थानीय लोगों का विस्थापन** (a) 18वीं एवं 20वीं शताब्दी के उत्तरी अमेरिका एवं ऑस्ट्रेलिया में यूरोपीय उपनिवेश (b) गोरे समाज का निर्माण (c) स्थानीय लोगों का विस्थापन एवं दबाव। यूरोपियन उपनिवेश का स्थानीय जनसंख्या पर प्रभाव पर परिचर्चा।	08 12	• शिक्षार्थियों को विस्थापन की ऐसी प्रक्रियाओं से अवगत कराना जिसके तहत् अमेरिका-ऑस्ट्रेलिया का विकास हुआ। • स्थानापन्न जनसंख्या पर इस प्रकार के प्रभावों को समझना।
	औद्योगिक क्रांति : परिचय– 18वीं एवं 19वीं शताब्दी के ब्रिटेन पर केन्द्रित (a) खोज एवं तकनीकी परिवर्तन (b) विकास के तरीके (c) श्रमिक वर्ग का आर्विभाव परिचर्चा- क्या वहां कोई औद्योगिक क्रांति हुई थी।	12	• उस अवधि के दौरान विकास की प्रकृति एवं सीमाओं को समझना। • शिक्षार्थियों में औद्योगिक क्रांति की परिचर्चा की जानकारी देना।
	आधुनिकीकरण के रास्ते– 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के पूर्वी एशिया पर केन्द्रित (a) जापान में आर्थिक विकास एवं सैन्यीकरण (b) साम्यवादी विकल्प एवं चीन आधुनिकीकरण के अर्थ पर परिचर्चा।	14	• शिक्षार्थियों को आधुनिक विश्व में विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों से अवगत कराना। • यह प्रदर्शित करना कि आधुनिकीकरण रूप की धारणा किस प्रकार विश्लेषित की जाती है।
	मानचित्र कार्य – इकाई : I - XI	10	

इतिहास

अनुमोदित पुस्तकों के नाम–

1. **विश्व इतिहास के कुछ विषय–** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।

राजनीतिशास्त्र

Class-XI

औचित्य :

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों को जो समाजशास्त्र / मानविकी क्षेत्र को ऐच्छिक विषय बनाना चाहते हैं, को राजनीति वैज्ञानिकों के विभिन्न मतों से परिचित होने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस स्तर पर ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता है जो छात्रों को विभिन्न राजनैतिक प्रक्रियाएँ जो इनके इर्द-गिर्द हैं, को समझने योग्य बनायें तथा इन राजनीतिक प्रक्रियाओं के ऐतिहासिक परिपेक्ष जिसने वर्तमान को स्वरूप दिया है को समझने का सुअवसर प्रदान करें। विभिन्न पाठ्य-क्रम राजनीतिशास्त्र के विभिन्न प्रकार एवं आयामों- राजनैतिक सिद्धांत, भारतीय राजनीति तथा अंतर्राष्ट्रीय राजनीति से छात्रों को परिचित करायें। अन्य दो विधाओं की जानकारी– तुलनात्मक राजनीति और लोक प्रशासन को इस पाठ्यक्रमों के विभिन्न स्थानों में समायोजित किया गया है। इन विधाओं से परिचय कराने में, विशेष ध्यान दिया गया है कि ताकि ये वर्तमान अनर्गल शब्दावली के रूप में विद्यार्थियों पर बोझ न बनें। इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य इन विषयों से संबंधित स्नातक स्तर गंभीर सहभागिता का शिलान्यास करना है न कि स्नातक पाठ्यक्रम की झाँकी प्रस्तुत करना।

उद्देश्य :

विषय के विशिष्ट उद्देश्यों को प्रत्येक वर्ष (सत्र) के पाठ्यक्रम की प्रस्तावना में दर्शाया गया है।

पाठ्य विषय की सार्थकता :

यह पाठ्य विषय उन छात्रों के लिए जिन्होंने राजनीति शास्त्र के अध्ययन को ऐच्छिक विषय के रूप में चयन किया है, भारतीय संविधान के प्रावधान और कार्यप्रणाली के संबंध में गहन सूझ प्रदान करने का प्रयास है। गहन सूझ प्रदान करने के लिए कदाचित कतिपय प्रकरणों में धाराओं और अनुच्छेदों की विस्तृत जानकारी की आवश्यकता हो सकती है परन्तु पाठ्य विषय के अधिकांश हिस्सों में कानूनी तकनीकियों पर अनर्थक विशेष दबाव डालने के प्रयास को दूर किया है और सिर्फ संवैधानिक प्रावधान के वास्तविक जीवन पर प्रभाव तथा सार्थकता की व्याख्या पर ही केन्द्रित किया गया है। इस स्तर पर छात्रों को इस सोंच के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि वे संविधान को एक राजनैतिक दस्तावेज के रूप में जिसमें दिये गये समय पर सामाजिक मूल्यों को दर्शाता है देखें। सांस्थानिक ढांचा को जो कि संविधान से प्रस्फुटित होता है संभावित राजनीतिक व्यवस्था के रूप में देखा जाना चाहिये जो वास्तविक जीवन के राजनीतिक प्रभाव हैं। इसके अलावा विद्यार्थियों को यह सोंचने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिये कि संविधान एक जीवंत दस्तावेज है जो निरंतर उभरता जा रहा है और अभी भी आगे सुधार की प्रक्रिया में है। इन बातों को ध्यान में रखकर पाठ्य विषय को कुछ संवैधानिक प्रावधानों को कुछ सिद्धांतों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। प्रत्येक सैद्धांतिक वर्ग से एक खास संरचना निकलती है–

- यह संविधान के हिस्से में निहित दर्शन अथवा इसकी सार्थकता को स्वीकार करता है।
- इसका उद्देश्य संवैधानिक प्रावधानों से जुड़े विस्तृत जानकारी (संविधान की धाराएँ और अनुच्छेदों के तकनीकी प्रारूप और कानूनी विषयों को छोड़कर) तथा
- "किस प्रकार से प्रावधानों ने वास्तविक रूप में व्यावहारिक जीवन में भूमिका अदा की है" इस पर परिचर्चा करना।
- संविधान एवं इसकी कार्यप्रणाली के गहन समझ हेतु यह प्रस्तावित किया गया है कि प्रत्येक पाठ्य-वस्तु में एक उदाहरण हो (मुकदमा कानून, घटना अथवा राजनीतिक विवाद) जो संविधान के कार्यप्रणाली से लिया गया हो, तथा
- भारत के बाहर से एक उदाहरण लेकर, सांस्थानिक कार्यशैली को दर्शाना कि ये किस प्रकार से वर्तमान परिस्थिति से भिन्न हो सकते थे। ये पाठ्य-वस्तु, कक्षा-XI के भारत की राजनीति स्वतंत्रता के बाद पाठ्यक्रम की कड़ी होगी।

अध्ययन के उद्देश्य :

- छात्रों को ऐतिहासिक कार्यकलाप एवं परिस्थितियों, जिनके कारण संविधान तैयार हो सका के संबंध में समझने के योग्य बनाना।
- छात्रों को संविधान बनानेवालों के लिए विभिन्न दूरगामी दृष्टिकोणों से परिचय कराने के लिए सुयोग्य बनाना।
- इसका विश्लेषण करना कि किस प्रकार से संविधान के प्रावधान वास्तविक राजनैतिक जीवन में कार्य करते हैं।

पाठ्यक्रम संरचना

Class-XI

पत्र : एक — समय : 3 घंटे — कुल अंक : 100

इकाई		पीरियड	अंक
A. भारत का संविधान, सिद्धांत और व्यवहार			
इकाई-I	संविधान का निर्माण	08	04
इकाई-II	मौलिक अधिकार	10	04
इकाई-III	प्रजातांत्रिक प्रतिनिधित्व तंत्र	12	06
इकाई-IV	संसदीय प्रणाली की कार्यपालिका	15	08
इकाई-V	केन्द्रीय एवं राज्य स्तर पर विधायिका	15	08
इकाई-VI	न्यायपालिका	12	06
इकाई-VII	संघवाद	08	04
इकाई-VIII	स्थानीय सरकार	08	04
इकाई-IX	संविधान एक जीवंत दस्तावेज	08 }	....
इकाई-X	संविधान में निहित राजनैतिक दर्शन	08 }	06
	कुल	104	50
B. राजनैतिक सिद्धांत			
इकाई-XI	राजनैतिक सिद्धांतों से परिचय	10	06
इकाई-XII	स्वतंत्रता	10 }	.....
इकाई-XIII	समानता	12 }	14
इकाई-XIV	सामाजिक न्याय	12 }	
इकाई-XV	अधिकार	12	08
इकाई-XVI	नागरिकता	12	06
इकाई-XVII	राष्ट्रवाद	10	04
इकाई-XVIII	धर्मनिरपेक्षवाद	10	06
इकाई-XIX	शांति	08	06
इकाई-XX	विकास	08	
	कुल	104	50

पाठ्य-वस्तु : भारत का संविधान, सिद्धांत और व्यवहार–

1. **संविधान का निर्माण–** हमें संविधान की आवश्यकता क्यों है ? संविधान क्या करता है ? किन्होंने संविधान का निर्माण किया ? किस प्रकार से देश के विभाजन ने संविधान सभा को प्रभावित किया ? संविधान निर्माण के स्त्रोत क्या थे ? **(8 पीरियड)**
2. **मौलिक अधिकार–** संविधान में अधिकार के प्रस्ताव की, हमें क्यों आवश्यकता है ? क्यों, सम्पत्ति का अधिकार संविधान के मौलिक अधिकारों से हटा लिया गया ? किस प्रकार से न्यायालयों की व्याख्याओं से मौलिक अधिकार प्रभावित हुए हैं ? किस प्रकार मौलिक अधिकार, नागरिक स्वतंत्रता का आधार प्रस्तुत करता है ? मूल कर्त्तव्य क्या हैं ? **(10 पीरियड)**
3. **प्रजातांत्रिक प्रतिनिधित्व तंत्र–** चुनाव की विभिन्न प्रक्रियाएँ क्या-क्या हैं ? किस प्रकार ये विभिन्न प्रक्रियाएँ पार्टियों और राजनीति को प्रभावित करती हैं ? इस व्यवस्था के क्या-क्या प्रभाव हैं ? सुरक्षित चुनाव क्षेत्रों की व्यवस्था क्यों है ? स्वच्छ एवं निष्पक्ष चुनाव को सुनिश्चित करने के क्या प्रावधान हैं ? चुनाव आयोग क्या करता है ? **(12 पीरियड)**
4. **संसदीय प्रणाली में कार्यपालिका–** दूसरे प्रारूपों को छोड़कर क्यों संसदीय प्रणाली की सरकार का चयन किया गया ? क्यों संसदीय प्रणाली में संवैधानिक प्रमुख की आवश्यकता है ? किस प्रकार प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री निर्वाचित होते हैं ? भारत के राष्ट्रपति के औपचारिक एवं वास्तविक अधिकार क्या हैं ? प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री एवं मंत्रि परिषद् के क्या अधिकार हैं ? राज्यपाल के क्या अधिकार हैं ? **(15 पीरियड)**
5. **केन्द्रीय एवं राज्य स्तर पर विधायिका–** भारतीय संसद की दो सभाएँ क्यों हैं ? किस प्रकार से संसद एवं विधान मंडलों का गठन होता है ? लोकसभा एवं राज्यसभा के क्या अधिकार हैं ? किस प्रकार से कानून पारित किया जाता है ? किस प्रकार से कार्यपालिका को उत्तरदायी बनाया जाता है ? दल-बदल को रोकने के लिए संवैधानिक प्रावधान क्या हैं ? **(15 पीरियड)**
6. **न्यायपालिका–** कानून का शासन क्या है ? क्यों हमें स्वतंत्र न्यायपालिका की आवश्यकता है ? भारत में स्वतंत्र न्यायपालिका सुनिश्चित

राजनीतिशास्त्र

करने के क्या प्रावधान हैं ? न्यायाधीशों की नियुक्ति किस प्रकार की जाती है ? उच्चतम एवं उच्च न्यायालय के अधिकार क्या हैं ? जनहित के लिए वे किस प्रकार इन अधिकारों का उपयोग करते हैं ? (12 पीरियड)

7. **संघवाद–** संघीय व्यवस्था क्या है ? संघीय व्यवस्था में अनेकताओं को सुनिश्चित रूप से निहित करने के क्या प्रावधान हैं ? किस प्रकार से भारतीय संविधान का स्वरूप संघीय है ? किस प्रकार से संविधान केन्द्र को सुदृढ़ करता है ? क्यों कुछ राज्यों और क्षेत्रों के लिए विशेष प्रावधान हैं ? (8 पीरियड)

8. **स्थानीय सरकार–** हमें क्यों अधिकार के विकेन्द्रीकरण की आवश्यकता है ? संविधान में स्थानीय स्वशासन की परिस्थिति क्या है ? ग्रामीण एवं शहरी स्थानीय सरकारों की मूलभूत विशेषताएँ क्या हैं ? स्थानीय सरकारों को संवैधानिक परिस्थिति देने का क्या प्रभाव पड़ा है ? (8 पीरियड)

9. **संविधान एक जीवंत दस्तावेज–** इसके बनने के समय से किस प्रकार संविधान का स्वरूप बदला है ? कौन से होनेवाले परिवर्तनों को लेकर विवाद हो रहा है ? किस प्रकार से कार्यशील प्रजातंत्र ने संविधान के लिए कार्य किया है ? (8 पीरियड)

10. **संविधान में निहित राजनैतिक दर्शन–** संविधान के मूल प्रावधान क्या हैं ? इन मूलभूत प्रावधानों में निहित दृष्टिकोण क्या हैं ? किस प्रकार से इन दृष्टिकोणों को आधुनिक राजनैतिक विचारों द्वारा स्वरूप दिया गया है ? (8 पीरियड)

वर्ग-XI - राजनैतिक सिद्धांत

(पाठ्यक्रम की सार्थकता)

यह एक प्रारंभ करनेवालों का पाठ्यक्रम है जिसमें मानक राजनैतिक दर्शन है तथा जो यह प्रयास करता है कि–

- छात्र अपनी कुशाग्रता के साथ नीति विषयक मुद्दे पर सघन राजनैतिक परिचर्चा एवं बहस के लिए प्रस्तुत हों,
- उन्हें किसी भी अपरिचित पूर्वाग्रह जिसे वे पहले ही मानसिक धरोहर मान चुके हैं, उनके विश्लेषण के लिए प्रोत्साहित करना,
- छात्रों में संविधान में निहित कतिपय वर्णित संवैधानिक मूल्यों के प्रति आदर-भाव जागृत कराना एवं
- राजनैतिक सिद्धांतों और उनके विचारों का एकीकरण के प्रति अभिरूचि पैदा करना।

ये पाठ्यक्रम कुछ महत्वपूर्ण संवैधानिक या हमारी प्रजातांत्रिक राजनैतिक व्यवस्था में निहित मूल्यों पर केन्द्रित है। इनमें से कुछ मुद्दे संवैधानिक मूल्यों से प्रत्यक्षरूप से संबंधित नहीं हैं किन्तु ये इस बात को दर्शाते हैं कि क्या-क्या हमारे प्रजातंत्र में निहित वृहद् नैतिक ढांचे हैं। छात्रों को प्रोत्साहित किया जाय ताकि वे पक्षपात-विहीन तर्कों के माध्यम से इन अवस्थानों में स्वयं को ढ़ाल सकें न कि उनके मन में विचार आयें कि ये शिक्षा के रूप में संविधान के विशेषज्ञों के विचार उनपर थोपे जा रहे हैं। यहां मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को दक्षता और आत्मविश्वास दिलाना है ताकि वर्तमान के कुछ बड़े प्रश्नों पर स्वयं विचार करें और अपना निष्कर्ष निकालने में सक्षम हों।

पाठ्यक्रम का निर्धारण कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाओं पर किया गया है। इस प्रकार से प्रत्येक अध्याय में निम्नलिखित जुड़े होंगे–

- महत्वपूर्ण धारणा और इससे जुड़ी धारणाओं का विश्लेषण,
- संवैधानिक मूल्यों की चर्चा जो धारणा में निहित है,
- कतिपय बौद्धिक स्त्रोतों पर परिचर्चा (विचारकगण, विभिन्न प्रकार के दर्शन, दस्तावेज आदि) जो कि धारणा के साथ जुड़े हैं, तथा
- धारणा से जुड़े वाद-विवाद के एक या उससे अधिक व्यावहारिक जीवन के उदाहरणों पर विस्तृत परिचर्चा।

पाठ्य-पुस्तक लिखने तथा कक्षा में पाठन कराने में इसे सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि वस्तु-विषय के उदाहरण/वास्तविक विवरण के उदाहरण को लेकर छात्रों में तार्किक कौशल पैदा करने पर जोर पड़े। पाठ्य-पुस्तक और शिक्षक छात्रों को प्रोत्साहित करें कि वे स्वयं प्रत्युत्पत्ति एवं व्यवहार करें न कि उन्हें धारणा से संबंधित से संबंधित सभी सूक्ष्म अंतरों को समझाने का प्रयास करें। छात्रों को उद्धरण एवं अलंकार युक्त भाषा के प्रयोग से रोका जाये। उनके तर्क अपनी सख्त जमीन पर खड़ी हो। इस प्रकार के पाठ्य-क्रम की सफलता संवेदनिक रूप से नये विचार और शैलीयुक्त परीक्षाओं पर निर्भर है।

पाठ से सीखने के उद्देश्य :

- तर्कपूर्ण शैलीयुक्त संक्षेपण की योग्यता उभारना।
- दूसरों के दृष्टिकोण के प्रति ध्यान एवं समादर भाव पैदा करना।
- विभिन्न राजनैतिक विचारक की विचारधाराओं और दैनिक जीवन में उनकी सार्थकता से छात्रों को परिचय कराना।
- वर्त्तमान की राजनैतिक स्थिति जो उन्हें घेरे हुए हैं, उनसे जुड़े विषयों पर छात्रों का उद्देश्यपूर्ण परिचर्या के योग्य बनाना।
- किसी भी अपरीक्षित पूर्वाग्रह को जिसे कई पीढ़ियों से ढोया जा रहा हो को विश्लेषित करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना।

पाठय-वस्तु : राजनीति सिद्धांत–

1. **राजनैतिक सिद्धांतों से परिचय–** राजनीति क्या है ? क्या हम प्रत्यक्ष रूप से दिखनेवाले अराजनैतिक क्षेत्र से भी राजनीति पाते हैं ? क्या

राजनैतिक बहस का तर्क द्वारा निदान किया जा सकता है ? हमें राजनैतिक सिद्धांतों की आवश्यकता क्यों है ? **(10 पीरियड)**

2. **स्वतंत्रता**– स्वतंत्रता क्या है ? व्यक्ति स्वतंत्रता के युक्तिसंगत बंधन क्या हैं ? किस तरह से सीमाओं की व्याख्या की गई है ? **(10 पीरियड)**
3. **समानता**– क्या सारी विषमताओं में असमानता है ? क्या समानता का अर्थ बिल्कुल '**हू बहू वही**' है ? असमानता के वृहद् रूप क्या हैं ? किस तरह से समानता की सिद्धि हो सकती है ? **(12 पीरियड)**
4. **सामाजिक न्याय**– क्या न्याय का अर्थ सब कुछ उचित है ? न्याय और समानता में क्या संबंध है ? अन्याय के विभिन्न रूप क्या हैं ? किस प्रकार से न्याय प्राप्त किया जा सकता है ? **(12 पीरियड)**
5. **अधिकार**– किस प्रकार से अधिकार दावे से भिन्न है ? उचित दावे के कौन-कौन से मुख्य प्रकार हैं ? किस प्रकार से हम व्यक्तिगत एवं सामुदायिक विवादों को निपटाते हैं ? किस प्रकार राज्य अधिकार के लिए सुयोग्य अथवा रूकावट पैदा करता है ? **(12 पीरियड)**
6. **नागरिकता**– नागरिक कौन हैं ? नागरिकता प्राप्त करने या छोड़ने से संबंधित कौन-कौन से मुख्य आधार हैं ? किस प्रकार से नागरिकता संबंधी नये दावों का निष्पादन किया जाता है ? क्या हम वैश्विक नागरिकता प्राप्त कर सकते हैं ? **(12 पीरियड)**
7. **राष्ट्रवाद**– राष्ट्र की सीमाओं की परिभाषा किस प्रकार दी जाती है ? क्या प्रत्येक देश में राज्य का होना आवश्यक है ? अपने नागरिकों से देश कौन-सी मांग कर सकता है ? राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के आधार क्या हैं ? **(10 पीरियड)**
8. **धर्मनिरपेक्षवाद**– धर्मनिरपेक्षवाद क्या है ? जीवन के किस क्षेत्र से इसका संबंध है ? धर्मनिरपेक्ष राज्य क्या है ? आधुनिक युग में हमें क्यों धर्मनिरपेक्ष राज्य की आवश्यकता है ? क्या भारत के लिए धर्मनिरपेक्षता उपयुक्त है ? **(10 पीरियड)**
9. **शान्ति**– शान्ति क्या है ? क्या शान्ति के लिए हमेशा अहिंसा की आवश्यकता हे ? किन शर्तों पर युद्ध न्याय संगत है ? क्या शस्त्रीकरण विश्व-शांति को बढ़ावा देता है ? **(8 पीरियड)**
10. **विकास**– प्रगति क्या है ? क्या प्रगति का विश्वव्यापी स्वीकृत सांचा है ? वर्तमान पीढ़ी के दावों का भविष्य की पीढ़ी के दावों से किस प्रकार समानता प्राप्त की जा सकती है ? **(8 पीरियड)**

राजनीतिशास्त्र

अनुमोदित पुस्तकों के नाम–

1. **भारत का संविधान, सिद्धांत और व्यवहार**– एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।
2. **राजनीतिक सिद्धांत**– एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।

Class-XI

औचित्य :

भूगोल को एक ऐच्छिक विषय के रूप में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लाया गया है। दस वर्षों के सामान्य शिक्षा के बाद विद्यार्थियों को इस स्तर पर विषय की गहनता से प्रथम बार परिचय कराया जाता है। उच्चतर शिक्षा के प्रवेश-बिन्दु होने के कारण छात्र भूगोल का चयन शैक्षिक लाभ के लिए करते हैं अत: उन्हें विषय की एक विस्तृत और गहन समझ की आवश्यकता है। अन्य के लिए भौगोलिक ज्ञान दैनिक जीवन के लिए उपयोगी है क्योंकि यह छोटे बच्चों की शिक्षा का महत्वपूर्ण माध्यम है। इसका अनुदान विषय-वस्तु और अध्ययन संबंधी प्रक्रिया, कौशल और मूल्य जो भूगोल प्रसारित करता है में निहित है। इस प्रकार से यह छात्रों को विश्व के पर्यावरण संबंधी एवं सामाजिक आयामों को समझने एवं मूल्यांकन करने में अच्छे ढंग से मदद करता है।

चूँकि भूगोल मानव एवं उसके माहौल के संबंधों की खोज करता है, इसके अध्ययन में भौतिक एवं मानविक माहौल और उनके बीच में विभिन्न स्तरों पर, जैसे- स्थानीय, राज्य, क्षेत्र, राष्ट्र और विश्व स्तर पर निहित है। भौतिक एवं मानवीय विशेषताओं और घटनाएँ जो कि पृथ्वी की सतह पर घट रही हैं, इनके विभिन्न प्रकार की वितरण प्रणालियों के मूलभूत सिद्धांतों के सही ढंग से समझने की आवश्यकता पैदा करता है। इन सिद्धांतों के व्यावहारिक स्वरूप को विश्व और भारत के चुने गये **केस स्टडी** के रूप में लिया जायेगा। इस प्रकार से भारत का भौतिक और मानवीय पर्यावरण और भौगोलिक दृष्टिकोण से इनके कुछ मुद्दों का अध्ययन विस्तृत विवरण के रूप में समायोजित किया जायेगा। विद्यार्थियों को विभिन्न भौगोलिक जांचों से परिचय कराया जायेगा।

उद्देश्य :

भूगोल का पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को इन तारांकित विवरणों द्वारा मदद करेगा-

- भूगोल के महत्वपूर्ण तकनीकी शब्दावलियों, मूलभूत सिद्धांतों से परिचय कराना।
- पृथ्वी की सतह पर मानवीय एवं प्राकृतिक क्रियाकलाप एवं घटनाओं की ब्रह्मांड में व्यवस्था के कार्यकलापों को खोजना, पहचानना एवं समझना।
- भौतिक एवं मानवीय पर्यावरण और उनके प्रभाव के बीच के संबंध को समझना एवं विश्लेषण करना।
- विभिन्न स्तर (स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक) पर नयी परिस्थितियों एवं समस्याओं को भौगोलिक ज्ञान और खोज के तरीकों द्वारा समाधान करने के लिए तैयार करना।
- भौगोलिक कुशलता जो सूचना एवं आंकड़ों के संकलन, संवर्द्धन एवं विश्लेषण से जुड़े हों तथा रिपोर्ट जो नक्शे, ग्राफ एवं संभवतया कम्प्यूटर के व्यवहार से जुड़े हों की तैयारी करना एवं
- समुदाय संबंधित मुद्दों, जैसे- पर्यावरण संबंधी, सामाजिक-आर्थिक, लिंग संबंधी, को समझने में भौगोलिक ज्ञान का उपयोग एवं समुदाय का प्रभावशाली और जिम्मेदार सदस्य बनना।

पाठ्यक्रम संरचना

Class-XI

पत्र : एक — समय : 3 घंटे — कुल अंक : 70

इकाई		अंक
A. भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत		**(35 अंक)**
इकाई-I	भूगोल एक विषय के रूप में	03
इकाई-II	पृथ्वी	05
इकाई-III	स्थलाकृतियाँ	08
इकाई-IV	जलवायु	10
इकाई-V	जलमंडल	04
इकाई-VI	पृथ्वी पर जीवन	03
इकाई-VII	मानचित्र कार्य	02
B. भारत : भौतिक पर्यावरण		**(35 अंक)**
इकाई-I	परिचय	03
इकाई-II	भौतिक संरचना	10
इकाई-III	वातावरण, वनस्पति एवं मिट्टी	10
इकाई-IV	प्राकृतिक व्याधियां और आपदा	09
इकाई-VII	मानचित्र कार्य	03
C. प्रायोगिक कार्य (3 घंटे)		**(30 अंक)**
इकाई-I	मानचित्र के मूलाधार	10
इकाई-II	स्थलाकृति एवं मौसम संबंधी मानचित्र	15
इकाई-III	प्रायोगिक रिकॉर्ड और मौखिकी	05

सामाजिक विज्ञान (भूगोल)

इकाई (Unit)	मूल अवधारणा (Key Concept)	उद्देश्य (Learning Outcome)	गतिविधि/संसाधन (Activity / Resource)	पीरियड (Period)
A. भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत–				75
इकाई-I भूगोल एक विषय के रूप में– • भूगोल एक समाकलन विषय के रूप में	• क्षेत्रीय विशेषताओं का विज्ञान • भूगोल की शाखाएँ • भौतिक भूगोल का महत्व	• विषय अध्ययन में विषय-वस्तु की जानकारी महत्वपूर्ण है। भूगोल विषय की महत्ता, उसकी क्षेत्र की जानकारी देना इत्यादि।	• भूगोल विषय पर परिचर्चा तथा आरेख द्वारा विषय वस्तु का चार्ट प्रस्तुत करना। (Flow diagram)	03
इकाई-II • पृथ्वी	• पृथ्वी की उत्पत्ति एवं उद्भव • पृथ्वी की आंतरिक संरचना • वेगनर का महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत एवं प्लेट-विवर्तनिक सिद्धांत • भूकम्प, ज्वालामुखी।	• पृथ्वी तथा उससे संबंधित तथ्यों जैसे उसकी संरचना, तथा उस पर होनेवाली घटनाओं की जानकारी प्रदान करना।	• पृथ्वी की आंतरिक संरचना का मॉडल (Model) तैयार करना।	10
इकाई-III • स्थलाकृतियाँ	• शैल एवं खनिज, शैल के प्रमुख प्रकार एवं उनकी विशेषताएँ, स्थलाकृति एवं उनका उद्भव।	• पृथ्वी पर भौगोलिक घटनाओं द्वारा परिवर्तन की जानकारी प्रदान करना। मृदा के निर्माण की जानकारी देना।	• स्थलाकृतियों की जानकारी समीप के क्षेत्रों में भ्रमण के द्वारा प्रदान करना। • मृदा अपक्षय का क्षेत्र दर्शाना।	18

इकाई (Unit)	मूल अवधारणा (Key Concept)	उद्देश्य (Learning Outcome)	गतिविधि/संसाधन (Activity / Resource)	पीरियड (Period)
	• भूआकृतिक प्रक्रियाएँ- अपक्षय, अपरदन एवं निक्षेपण एवं मृदा निर्माण			
इकाई-IV • जलवायु	• संघटन तथा संरचना, मौसम एवं जलवायु के तत्व, सूर्यताप- सूर्य की किरणों झुकाव एवं वितरण। • पृथ्वी का उष्मा बजट • जलवायु का वर्गीकरण • वायुमंडल का तापन एवं शीतलन (संचरण, संवहन एवं विकिरण) • तापमान को प्रभावित करनेवाले तत्व। • तापमान का वितरण- उदग्र एवं क्षैतिज, तापमान का व्युत्क्रमण। • वायुदाब की पेटियाँ • पवन- स्थायी, स्थानीय तथा मौसमी पवन तथा उनका प्रभाव। • वायुराशियां एवं वाताग्र • चक्रवात- बहिरूष्ण कटिबंधीय चक्रवात एवं उष्ण कटिबंधीय चक्रवात। • अवक्षेपण संघनन तथा वाष्पीकरण की प्रक्रिया। • संघनन के रूप- ओस, तुषार, कोहरा, धुंध एवं बादल। • वर्षण • वर्षा- प्रकार और विश्व वितरण। • विश्व की जलवायु- कोप्पेन (वर्गीकरण) • हरित गृह प्रभाव- वैश्विक तापन एवं मौसम परिवर्तन।	• वायुमंडल तथा उसमें मौसम एवं जलवायु का अध्ययन प्रदान करना। • दिन व दिन क्षरित मौसमी घटनाओं का मनुष्य पर प्रभाव पड़ता है। अत: इसकी जानकारी प्रदान करना आवश्यक है।	• प्रयोग, अवलोकन द्वारा इन मौसमी घटनाओं की जानकारी प्रदान करना।	30
इकाई-V • जलमंडल	• जलचक्र • महासागर- महासागरीय नित्तल • सामुद्रिक जल का तापमान तथा लवणता का वितरण। • महासागरीय जल की गतियाँ- लहरें, ज्वार-भाटा तथा महासागरीय जलधारायें।	• जलमंडल पृथ्वी पर महत्वपूर्ण संसाधन है। अत: इसकी जानकारी इस स्तर में आवश्यक है।	• मानचित्रों एवं आरेखों द्वारा	08
इकाई-VI • पृथ्वी पर जीवन	• पादप एवं अन्य जीवों की महत्ता, जैव विविधता एवं जैव-संरक्षण, पारिस्थितिकी। जैव भू-रासायनिक चक्र एवं पारिस्थितिकी संतुलन।	• जैवमंडल के अध्ययन की महत्ता, इसकी जानकारी, पारिस्थितिकी संतुलन के लिए आवश्यकताएँ।	• परिचर्या, अवलोकन एवं प्राकृतिक आपदाओं के अध्ययन द्वारा।	06

इकाई (Unit)	मूल अवधारणा (Key Concept)	उद्देश्य (Learning Outcome)	गतिविधि/संसाधन (Activity / Resource)	पीरियड (Period)
B. भारत- भौतिक पर्यावरण।				70
इकाई-I **परिचय–** • विश्व में भारत का स्थान	• भारत की वास्तविक स्थिति के ज्ञान हेतु	• भारत हमारा देश है। अतः इसकी जानकारी आवश्यक है।	• मानचित्र, परिचर्या एवं अवलोकन द्वारा।	06
इकाई-II **भौतिक संरचना–** • संरचना एवं आकृति • सिंचाई प्रणाली, जल छाजन की अवधारणा, हिमालय एवं प्रायद्वीपीय • प्राकृतिक विभाजन	• भारत के प्राकृतिक विभाजन की जानकारी हेतु	• भारत के प्राकृतिक विभाजन के साथ-साथ हिमालय का भारत के प्राकृतिक संरचना में योगदान।	• अध्ययन सामग्री, मानचित्र, अवलोकन एवं परिचर्या।	24
इकाई-III **वातावरण, वनस्पति एवं मिट्टी–** • मौसम एवं वातावरण– तापक्रम का स्थानिक एवं पार्थिव वितरण, दवाब, वायु एवं वर्षा, भारतीय मानसून प्रक्रिया, आरंभ एवं अस्थिरता, स्थानिक एवं पार्थिव, मौसमीय प्रकार। • प्राकृतिक वनस्पति- वनों के प्रकार एवं वितरण, वन्य-जीव संरक्षण, बायोस्फीयर रिजर्व। • मिट्टियाँ– मुख्य प्रकार (ICAR का वर्गीकरण) एवं उनका वितरण, भू-क्षरण एवं संरक्षण।	• भारत के मौसम की जानकारी हेतु भारतीय मानसून को प्रभावित करनेवाले कारक एवं भारत के ऋतुओं की जानकारी हेतु। • भारत के वनस्पति के प्रकार एवं जैव-संरचना हेतु आई.सी.एम.आर. द्वारा मिट्टियों के वर्गीकरण की जानकारी।	• मानसून, भारतीय कृषि एवं वनस्पति को किस प्रकार प्रभावित करता है ? • किस प्रकार भारत के वनस्पति एवं वन्य-जीवों को संग्रहित किया जा सकता है। आई.सी.ए.आर. के वर्गीकरण से भारत में उपजाऊ एवं अनुपजाऊ मिट्टियों का क्षेत्रीय विवरण।	• मानचित्र, अध्ययन सामग्री, अवलोकन एवं परिचर्या द्वारा। • अध्ययन सामग्री, मानचित्र, परिचर्या, अवलोकन द्वारा, सैटेलाईट छायाचित्र, रेखाचित्र एवं मानचित्र द्वारा।	24
इकाई-IV **प्राकृतिक आपदा : कारण, परिणाम एवं प्रबंधन–** • बाढ़ एवं सूखा • भू-कम्प एवं सुनामी • चक्रवात • भू-स्खलन	• प्राकृतिक आपदा के संदर्भ में जानकारी देना।	• प्राकृतिक आपदा की पूर्व जानकारी अत्यावश्यक है ताकि जीवन को विनाश-लीला से बचाया जा सके।	• सैटेलाईट चित्र, मानचित्र, छायाचित्र, अवलोकन, परिचर्या।	16

इकाई (Unit)	मूल अवधारणा (Key Concept)	उद्देश्य (Learning Outcome)	गतिविधि/संसाधन (Activity / Resource)	पीरियड (Period)
3. प्रायोगिक कार्य–				40
इकाई-I • मानचित्र के मूल-आधार।	• मानचित्र– प्रकार, मापक– प्रकार। • दूरी मापन • दिशा की जानकारी (मानचित्र पर) • रूढ़ चिन्हों की जानकारी • अक्षांश, देशांतर और समय • मानचित्र प्रक्षेप– प्रकार एवं उपयोगिता। • शंक्वाकार प्रक्षेप– एक मानक समांतर तथा मर्केटर प्रक्षेप का निर्माण।	• मानचित्र अध्ययन का उद्देश्य, पृथ्वी पर उपस्थित स्थलाकृतियों को समतल कागज पर उतारना तथा अध्ययन की जानकारी प्रदान करना।	• रेखाचित्र निर्माण, कुछ प्रमुख स्थानों तथा स्थलाकृतियों को विश्व-मानचित्र पर दर्शाना।	12
इकाई-II • स्थलाकृतिक एवं मौसम संबंधी मानचित्र का अध्ययन।	• स्थलाकृतिक मानचित्र का अध्ययन (भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा प्रस्तुत, टोपोसीट (1:50,000 मापक पर) का अध्ययन तथा उस पर बसाव, वायवीय छायांकन एवं उपग्रही चित्र। • वायवीय छायांकन– ज्यामिति के प्रकार– उदग्र वायवीय फोटोग्राफ, मानचित्र एवं वायवीय फोटोग्राफ में अंतर, वायव फोटो की मापनी। • उपग्रही चित्र– सुदूर संवेदन का परिचय एवं अवस्थाएँ, संवेदक के माध्यम से परावर्तित ऊर्जा का अधिसूचना, संवेदन विभेदन, उपग्रहों से प्राप्त प्रतिबिम्बों का निर्वाचन।	• स्थलाकृति के स्वरूप की जानकारी मानचित्र द्वारा करना।	• टोपोसीट, मानचित्र एवं दृढ़-चिन्ह।	28
• सम्मोच्य रेखा	• सम्मोच्चय रेखा के आधार पर पार्श्व चित्र, पर्वत, पठार, घाटी, जलप्रपात तथा ढाल।	• उत्तल स्थलाकृतियों का समतल धरातल पर अध्ययन एवं निर्माण की जानकारी प्रदान करना।	• मानचित्र, टोपोसीट	
• मौसम यंत्र, मानचित्र तथा चार्ट	• थर्मामीटर, बैरोमीटर, वर्षा-मापक, शुष्क एवं आर्द्र, वायुदाबमापी, बल्ब थर्मामीटर, यंत्रों का पाठन (Reading), मौसम के चार्ट का उपयोग, जलवायु आंकड़ों का मानचित्रीकरण, मौसम मानचित्र का निर्णय, दबाव की जानकारी, वायु एवं वर्षा का वितरण।	• यंत्रों का पाठन आवश्यक है।	• वर्ग कक्षा का तापक्रम नोट करना तथा उसमें अंतर के कारणों पर चर्चा कराना इत्यादि।	

✣

<u>अनुमोदित पुस्तकों के नाम–</u>

(i) भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

(ii) भारत का भौतिक पर्यावरण (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

(iii) भूगोल में प्रयोगात्मक कार्य (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

अर्थशास्त्र

Class-XI

औचित्य :

समाजशास्त्र के एक भाग के रूप में अर्थशास्त्र है जो प्रत्येक मानव के नियति को प्रभावित करता है फिर भी भारत के विद्यालय के पाठ्य-क्रम में इस पर नगण्य ध्यान दिया गया है। चूँकि आर्थिक जीवन और अर्थव्यवस्था परिवर्तन के दौर से गुजरते हैं, बच्चों को इसके आधारभूत शिक्षा एवं अपने अनुभव की आवश्यकता है।

ऐसा करने में, यह आवश्यक है कि उन्हें आर्थिक वास्तविकता का अध्ययन एवं समझने के साथ-साथ इसके विश्लेषण की कुशलता प्राप्त हो। अर्थशास्त्र को एक काल्पनिक विषय के रूप में विद्यालय शिक्षा के प्रारंभिक काल में पढ़ाना, विषय के निरर्थक शिक्षा के रूप में होगा।

उच्च शिक्षा के स्तर पर, छात्र इस स्थिति में होते हैं कि वे काल्पनिक विचारों को समझने में सक्षम होते हैं। वे इसके लिए सक्षम होते हैं कि इस पर अपनी सोच-शक्ति का व्यवहार कर सकें और अपनी समझ तैयार कर सकें। यह एक ऐसी स्थिति है जबकि शिक्षार्थियों को अर्थशास्त्र के कुठोर शिष्टाचार से सुचारू ढंग से परिचय कराया जाता है।

अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम को इस प्रकार लागू किया जाता है कि प्रारंभिक स्तर पर शिक्षार्थियों को आर्थिक वास्तविकता जो आज राष्ट्र के समक्ष हैं से परिचय कराया जाता है। इसके साथ-साथ मूलभूत सांख्यिकी उपकरणों के साथ विस्तृत आर्थिक वास्तविकता से भी परिचय कराया जाता है। बाद में शिक्षार्थियों का परिचय अर्थशास्त्र एक काल्पनिक सिद्धांत के रूप में कराया जाता है।

अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रमों में कई योजनाएँ एवं कार्यकलाप हैं। ये शिक्षार्थियों को विभिन्न प्रकार के आर्थिक मुद्दों जो दैनिक जीवन तथा जो वृहद और अदृश्य हैं दोनों को तलाशने का अवसर प्रदान करता है। ज्ञानवर्द्धक कुशलता जो उन्हें इन पाठ्य-वस्तुओं से प्राप्त होता है उन्हें परियोजना और कार्यकलापों में सहाय्य होता है। पाठ्य-क्रम इस बात के भी अवसर प्रदान करता है कि वे विषय-वस्तु, संचार तकनीकों के अवसर प्राप्त करें ताकि उनके शिक्षा ग्रहण की प्रक्रिया सुचारू रूप से चले।

उद्देश्य :

1. अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएँ तथा आर्थिक तर्क को समझने तथा शिक्षार्थी दैनिक जीवन में काम करने वाले अथवा उपभोक्ता के रूप में इसका उपयोग कर सकें।
2. शिक्षार्थियों की राष्ट्र-निर्माण में भूमिका अदा करने की अनुभूति पैदा करना और उन्हें राष्ट्र के समक्ष वर्तमान आर्थिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाना।
3. आर्थिक मुद्दों के विश्लेषण के लिए शिक्षार्थियों को आधारभूत उपकरण मुहैय्या कराना। यह उनके लिए भी युक्तिसंगत है जो आगे चलकर अर्थशास्त्र का उच्च स्तर पर अध्ययन कर रहे हैं।
4. एक प्रकार की समझ पैदा करना कि किसी भी आर्थिक मुद्दे के एक से अधिक दृष्टिकोण हो सकते हैं तथा इन मुद्दों पर तर्क के आधार पर बहस करने की कुशलता प्राप्त करना।

अर्थशास्त्र की पढ़ाई उच्च माध्यमिक स्तर पर चार सत्रों में होगी। प्रत्येक सत्र का विस्तृत विवरण इस प्रकार है–

पाठ्यक्रम संरचना

Class-XI

पत्र : एक | समय : 3 घंटे | कुल अंक : 100

इकाई		पीरियड	अंक
A. अर्थशास्त्र के लिए सांख्यिकी			
इकाई-I	परिचय	05	03
इकाई-II	आंकड़ों का संग्रह एवं समायोजन	25	12
इकाई-III	सांख्यिकी उपकरण एवं निष्कर्ष	64	30
इकाई-IV	अर्थशास्त्र में परियोजनाओं का विकास	10	05
	कुल	104	50
B. भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास			
इकाई-VII	विकास की नीतियाँ और अनुभव (1947-90)	18	10
इकाई-VIII	आर्थिक सुधार (1991 से)	14	08
इकाई-IX	भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्त्तमान चुनौतियाँ	60	25
इकाई-X	भारत और इसके पड़ोसी देशों के तुलनात्मक विकास का अनुभव	12	07
	कुल	104	50

1. अर्थशास्त्र के लिए सांख्यिकी एवं
2. भारतीय आर्थिक विकास

पाठ्य-वस्तु-I : अर्थशास्त्र के लिए सांख्यिकी

इस पाठ्य-वस्तु में शिक्षार्थियों से अपेक्षित है कि वे सुचारू रूप से आर्थिक आयामों से संबंध, विभिन्न उपलब्ध वस्तुओं को गुणात्मक एवं मात्रात्मक रूप से विश्लेषण बिल्कुल ही साधारण ढंग से कर सकें। इसके अलावा यह पाठ्यक्रम विभिन्न सांख्यिकी उपकरणों की सहायता से आर्थिक वस्तु-स्थिति का विश्लेषण और व्याख्या करने के योग्य बनाता है और ताकि वे स्वयं किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकें। ऐसा करने में शिक्षार्थी से अपेक्षित है कि विभिन्न आर्थिक आंकड़ों के व्यवहार को समझ सकें।

इकाई-I : परिचय (5 पीरियड)

- अर्थशास्त्र क्या है ?
- अर्थशास्त्र में सांख्यिकी का अर्थ, विषय-क्षेत्र और महत्व।

इकाई-II : **आंकड़ों का संग्रह एवं समायोजन** (25 पीरियड)

- **आंकड़ों का समायोजन–** आंकड़ों के स्रोत, प्राथमिक और द्वितीयक, किस प्रकार से मूल आंकड़े को संग्रह किया जाता है, आंकड़ों को संग्रह करने की विधा।
- **द्वितीयक आंकड़ों के कुछ महत्वपूर्ण स्रोत–** भारत की जनगणना और राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन।
- **आंकड़ों का संगठन–** चर का अर्थ और प्रकार, बारम्बारता वितरण
- **आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण–** आंकड़ों का सारणीबद्ध एवं आरेखात्मक प्रस्तुतिकरण।
  - (क) ज्यामितीय आकार, दंड आरेख और वृत्त आरेख
  - (ख) बारंबारता आरेख, आयत चित्र, बहुभुज एवं तोरण और
  - (ग) अंक गणितीय रेखा चित्र (समय श्रृंखला ग्राफ)

इकाई-III : **सांख्यिकी उपकरण एवं निष्कर्ष** (64 पीरियड)

- केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप, माध्य (सरल एवं भारित), माध्यिका एवं बहुलक
- परिक्षेपण के माप, चरम परिक्षेपण, परस, चतुर्थक विचलन, विचलन का गुणांक, माध्य विचलन का गुणांक, लारेंज वक्र, अर्थ और उपयोगिता।

- **सहसंबंध**– अर्थ, प्रकीर्ण आरेख, सह संबंध को मापने की विधि, कार्ल पीअर्सन के दो चरों का अवर्गीकृत आंकड़ा और स्पीयरमैन का कोटि सह संबंध।
- **सूचकांक का परिचय**– अर्थ एवं प्रकार, थोक मूल्य सूचकांक, उपभोक्ता मूल्य सूचकांक, कृषि उत्पादन सूचकांक, सूचकांक का उपयोग, मुद्रा स्फीति और सूचकांक।

  (प्रत्येक अंकगणितीय सवालों एवं समाधानों के लिए उपयुक्त अर्थशास्त्रीय व्याख्या की जा सकती है। इसका अर्थ है कि शिक्षार्थी समस्याओं का समाधान कर जो परिणाम देते हैं उसकी व्याख्या प्रस्तुत करें।)

इकाई-IV : अर्थशास्त्र में परियोजनाओं का विकास **(10 पीरियड)**

- शिक्षार्थियों को परियोजनाओं के विकास के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। जो प्राथमिक आंकड़े, द्वितीयक आंकड़े या दोनों को सन्निहित किए हों। कुछ संगठनों के केस अध्ययन को भी प्रोत्साहित किया जा सकता है। कुछ योजनाओं के प्रारूप निम्नलिखित हैं- (यद्यपि ये जरूरी नहीं लेकिन परामर्शयोग्य हैं ?)

(क) अपने पड़ोस के जनांकिकी संरचना पर एक रिपोर्ट

(ख) घर के लोगों में उपभोक्ता जागरूकता

(ग) आपके बाजार में कुछ सब्जियों के बदलते मूल्य

(घ) सहकारी संस्थानों का अध्ययन, दुग्ध सहकारी संस्था

COURSE - II

भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास

अर्थशास्त्र

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है कि शिक्षार्थी को भारतीय अर्थव्यवस्था के मूल प्रकरणों को उसकी पृष्ठभूमि की परिचर्या के आधार से परिचय कराना। इस प्रक्रिया में चूंकि **वे एक जागरूक नागरिक हैं** से आशा की जाती है कि वह इन आर्थिक प्रकरणों पर सरकार की भूमिका का आकलन करने में सक्षम हो सकेंगे।

यह पाठ्यक्रम यह भी जानने का सुअवसर प्रदान करता है कि किस तरह के आर्थिक संसाधन हमारे पास हैं, किस तरह से इन संसाधनों को विभिन्न क्षेत्रों में कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है ? इस तरह के गुणात्मक आंकड़ों को जानने के बाद शिक्षार्थी भारत के आर्थिक भविष्य एवं आर्थिक घटनाओं को समझने में सक्षम हो सकते हैं। इसका अर्थ कतई यह नहीं है कि शिक्षार्थियों पर आंकड़ों का बोझ डाला जाय। भारत की आर्थिक स्थिति का अपने पड़ोसी देशों से तुलना करने पर हमें यह भी अवसर मिलेगा कि हम अपने देश की स्थिति आंक सके कि आज हमारी स्थिति कैसी है ? साथ ही साथ इससे शिक्षार्थियों को विभिन्न सारगर्भित विषयों को समझने एवं परिचर्चा करने का भी अवसर मिलेगा। जब शिक्षार्थी अपना पाठ्यक्रम पूरा कर लेंगे तब शिक्षार्थी विभिन्न मीडिया द्वारा जो आर्थिक समीक्षा प्रस्तुत किया जाता है, उसे भी समझने में सक्षम हो सकेंगे।

इकाई-I : विकास की नीतियाँ और अनुभव (1947 - 90) **(18 पीरियड)**

- स्वतंत्रता के उपलक्ष्य पर भारतीय अर्थव्यवस्था का एक संक्षिप्त परिचय।
- पंचवर्षीय योजना के सामान्य लक्षण।
- भारतीय कृषि की मुख्य प्रकृति, समस्यायें और नीतियाँ (संस्थात्मक पक्ष एवं नवीन आर्थिक रणनीति आदि), उद्योग (औद्योगिक लाइसेंसिंग आदि) एवं विदेश व्यापार

इकाई-II : आर्थिक सुधार (1991) तक **(14 पीरियड)**

- आवश्यकता एवं मुख्य प्रकृति, उदारीकरण, वैश्वीकरण एवं निजीकरण।
- LPG नीति का मूल्यांकन

इकाई-III : भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान चुनौतियाँ **(60 पीरियड)**

- गरीबी, पूर्ण निर्धनता, अल्पमालिक निर्धनता, निर्धनता निवारण के मुख्य कार्यक्रम– एक समीक्षा।
- ग्रामीण विकास- मुख्य बिन्दु, ऋण एवं बाजार, सहकारी संस्थाओं की भूमिका, कृषि विविधीकरण, अनुपूरक कृषि, जैविक कृषि।

- मानव पूंजी का निर्माण- मानव पूँजी एक स्त्रोत के रूप में, मानव पूंजी एवं आर्थिक संवृद्धि, भारत में शिक्षा का विकास एवं उपलब्धियाँ।
- रोजगार- संवृद्धि, अनौपचारीकरण एवं अन्य मुद्दे।
- आधारिक संरचना- अर्थ एवं प्रकार, केस अध्ययन, ऊर्जा, स्वास्थ्य और स्वास्थ्य आधारिक संरचना के सूचक एक मूल्यांकन।
- पर्यावरण- धारणीय विकास, संसाधनों की अल्प उपलब्धता, पर्यावरणीय ह्रास।

इकाई-IV : भारत और इसके पड़ोसी देशों के तुलनात्मक विकास अनुभव **(12 पीरियड)**

- भारत एवं पाकिस्तान
- भारत एवं चीन
- मुख्य बिन्दु- वृद्धि, जनसंख्या, क्षेत्रीय विकास एवं अन्य विकासात्मक निर्देशांक।

✣

अनुमोदित पुस्तकों के नाम–

1. **अर्थशास्त्र में सांख्यिकी**– एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।
2. **भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास**– एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।

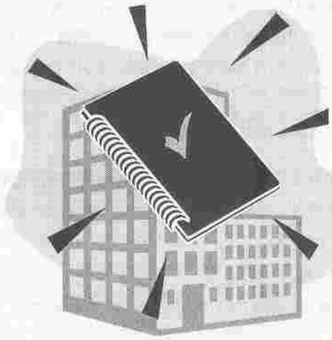

समाजशास्त्र

Class-XI

औचित्य :

उच्च माध्यमिक स्तर पर समाजशास्त्र को ऐच्छिक विषय के रूप में लाया गया है। पाठ्यक्रम को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि शिक्षार्थी अपने दैनिक जीवन में घटनेवाले विभिन्न कार्यकलापों को देख-सुनकर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करें और एक निर्माणशील मानसिकता के द्वारा समाज में परिवर्तन लायें। इसके साथ-साथ, इस विषय की सार्थकता है, विषय-वस्तु संबंधित सैद्धांतिक समझ, छात्रों में लाना। इस स्तर पर पाठ्यक्रम का उद्देय यह है कि शिक्षार्थी मानव व्यवहार की गतिशीलता को विभिन्न जटिल परिस्थितियों में और इनके प्रभाव को समझ सकें। आज के शिक्षार्थियों के लिए जरूरत है कि वे समाज को समझने के प्रयास में वे इससे जुड़े प्रश्नों का उत्तर देने में, उसकी व्याख्या करने में सक्षम हों (वे प्रश्न जो किसी के मन में उठ सकता है)। अत: एक विश्लेषणात्मक ढंग के प्रयास की आवश्यकता है जो सामाजिक ढांचे का विश्लेषण कर सके ताकि ये छात्र अर्थपूर्ण ढंग से सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में सहभागिता दे सकें। पाठ्य वस्तु में सिर्फ आपस में मिल-जुलकर विचार आदान-प्रदान के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने का प्रावधान ही नहीं है बल्कि इस बात का भी प्रावधान है कि शिक्षक और शिक्षार्थीगण आपस में मिल-जुलकर कुछ नई दिशाओं की खोज करेंगे।

- समाजशास्त्र समाज का अध्ययन करता है। एक शिशु का समाज की समझ, जिस समाज में वह रहता है, एक दोहरा अनुभव है। एक स्तर पर समाजशास्त्र परिवार, पारिवारिक संबंध, वर्ग, जाति, जनजाति, धर्म क्षेत्र ऐसे संस्थानों का अध्ययन करता है। इन सबसे एक शिशु परिचित रहता है (विभिन्न रूपों में- क्योंकि भारत एक विभिन्न स्वरूपों का समाज है। इसमें क्षैतिज और उदग्र रूप में विषमता है)। पुस्तक में यह प्रयास किया गया है कि प्रत्यक्ष रूप से इन दोनों स्त्रोतों की ताकत एवं प्रश्न बिन्दुओं को पाठकगण समझ सकें।

- महत्वपूर्ण बात यह है कि समाजशास्त्र की बौद्धिक विरासत इस विषय को बहु दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत करता है जो प्रत्यक्ष रूप से अपरिचायकता की आवश्यकता में संलग्न करता है, इतना ही नहीं दिये गये प्रश्नों को नासमझ बनाता है। समाजशास्त्र का यह प्रश्नात्मक एवं विश्लेषणात्मक रूप अन्य संस्कृतियों को समझने तथा अपने संस्कृति दोनों को समझने योग्य बनाता है।

- यह बहु दृष्टिकोण निहित सम्पन्नता एवं खुलापन की क्षतिपूर्ति करता है जो कई अन्य विषय व्यावहारिक रूप में सहभागी नहीं होते। इसकी उत्पत्ति के समय से ही समाजशास्त्र ने आपस में विरोधी स्वरूप के रीति-रिवाजों के व्याख्यात्मक शैली तथा आपस में एक-दूसरे के संवर्द्धन के अनुभव किया है। ये इस बात का भी ख्याल रखता है कि इनके मुख्य उद्देश्य और कारणगत व्याख्या जो विचारणीय शालीनता के साथ कारण स्वरूप संबंधों पर उचित महत्व देता है। अत: यह आश्चर्य की बात नहीं कि इसकी क्षेत्रीय कार्य परम्परा विस्तृत पैमाने पर आकलन विधि और समृद्ध नृजातीयवर्ग से जुड़ा है। वस्तुत: भारतीय समाजशास्त्र खासकर इन विशेषताओं के साथ जो समाजशास्त्र के स्पष्ट दृष्टिकोण और सामाजिक मानवशास्त्र के बीच कड़ी है, सुचारू ढंग से जोड़ता है। पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को पर्याप्त मात्रा में क्षेत्रीय कार्य और समाजशास्त्र के विभिन्न पहलुओं के सैद्धांतिक महत्व के प्रति अभिरूचि जगाने का अवसर प्रदान करता है।

- समाजशास्त्र का बहुआयामी धरोहर शिक्षार्थी जिस समाज में रहता है उसकी दोनों विहंगम एवं सूक्ष्म दृष्टि प्रदान करता है। यह खासकर आज के परिप्रेक्ष्य में सत्य है जब स्थानीय को जटिल रूप से परिभाषित किया गया है और इसे वृहद् वैश्विक कार्यप्रणाली के रूप में ढाला गया है।

- पाठयक्रम इस धारणा के साथ अग्रसर होता है कि लिंग समाज के संघटनीय सिद्धांत के रूप में एक पुराने अध्याय के रूप में व्यवहृत नहीं हो सकता बल्कि यह एक आधार स्तंभ है जो सारे अध्यायों में चर्चित रहेगा।

- इन अध्यायों का प्रयास होगा कि शिक्षार्थी एक केन्द्रीय दृष्टिकोण अपनायें जिससे जो शिक्षार्थी के वर्तमान की वास्तविकता, जो सामाजिक ढांचे एवं सामाजिक गतिविधियों को जान सकें, यही समाजशास्त्र का अध्ययन है।

- समाज की खोज करने का एक सजग प्रयास किया जायेगा। इससे सीखना, अपने आप खोज करने की प्रक्रिया हो जायेगी। ऐसा करने का एक तरीका यह है कि समाजशास्त्र की अवधारणाओं की चर्चा दत्त धारणा के रूप में नहीं बल्कि सामाजिक कार्यकलापों के परिणाम के रूप में (जिसका मानव द्वारा निर्माण किया गया है) और इस तरह प्रश्न के लिए खुला हो।

उद्देश्य :

1. शिक्षार्थियों को जो कुछ उन्होंने कक्षा में सीखा है उसे बाह्य जगत से आनुसांगिक रूप से संबंध स्थापित करने योग्य बनाना।
2. समाजशास्त्र की मूल अवधारणा जो शिक्षार्थियों को सामाजिक जीवन के प्रेक्षण एवं व्याख्या के योग्य बनाते हैं से परिचय कराना।
3. सामाजिक प्रक्रिया की जटिलताओं के प्रति सजग करना।
4. भारत एवं विश्व के समाज में अनेकता को समझना एवं
5. वर्त्तमान भारत के समाज में होनेवाले परिवर्तन को समझने एवं व्याख्या करने के योग्य बनाना।

पाठ्यक्रम संरचना

Class-XI

पत्र : एक | समय : 3 घंटे | कुल अंक : 100

इकाई		अंक
A. समाजशास्त्र का परिचय		
इकाई-I	समाज, समाजशास्त्र एवं अन्य विज्ञान से संबंध	10
इकाई-II	मूल अवधारणायें	10
इकाई-III	सामाजिक संस्थायें	10
इकाई-IV	संस्कृति और समाज	10
इकाई-V	प्रायोगिक समाजशास्त्र : प्रविधि एवं तकनीक	10
B. समाज का बोध		
इकाई-VI	संरचना, प्रक्रिया एवं स्तरीकरण	10
इकाई-VII	सामाजिक परिवर्तन	10
इकाई-VIII	पर्यावरण और समाज	10
इकाई-IX	पाश्चात्य सामाजिक विचारक	10
इकाई-X	भारतीय समाजशास्त्री	10
	कुल	100

(a) समाजशास्त्र : एक परिचय

इकाई-I : समाज और समाजशास्त्र (22 पीरियड)

- समाज का परिचय- वैयक्तिक एवं सामूहिक, बहु दृष्टिकोण।
- समाजशास्त्र का परिचय- उद्भव, प्रकृति एवं क्षेत्र, अन्य विषयों के साथ संबंध।

इकाई-II : मूल अवधारणायें (22 पीरियड)

- सामाजिक समूह
- परिस्थिति एवं भूमिका
- सामाजिक स्तरीकरण
- सामाजिक नियंत्रण

इकाई-III : सामाजिक संस्थायें (24 पीरियड)

- परिवार एवं नातेदारी
- राजनीतिक एवं आर्थिक संस्था
- धर्म एक सामाजिक संस्था के रूप में
- शिक्षा एक सामाजिक संस्था के रूप में

इकाई-IV : संस्कृति एवं समाज (20 पीरियड)

- संस्कृति, मूल्य एवं मानदंड
- समाजीकरण, अनुरूपता, विरोध एवं व्यक्ति निर्माण।

इकाई-V : समाजशास्त्र : प्रविधि एवं तकनीक (22 पीरियड)

- उपकरण एवं तकनीक- प्रेक्षण, सर्वे एवं साक्षात्कार।
- क्षेत्र कार्य का समाजशास्त्र में महत्व

(b) समाज का बोध

इकाई-I : संरचना, प्रक्रिया एवं स्तरीकरण (22 पीरियड)

- सामाजिक संरचना
- सामाजिक प्रक्रियाएँ- सहयोग, प्रतिस्पर्द्धा, संघर्ष।
- सामाजिक स्तरीकरण- वर्ग, जाति, प्रजाति एवं लिंग।

इकाई-II : सामाजिक परिवर्तन (22 पीरियड)

- सामाजिक परिवर्तन- प्रकार एवं आयाम, कारण एवं परिणाम।

- सामाजिक स्तर- प्रभुत्व, कानून एवं अधिकार, विवाद एवं हिंसा।
- गांव, नगर एवं शहर- ग्रामीण एवं शहरी समाज में परिवर्तन।

इकाई-III : पर्यावरण और समाज **(18 पीरियड)**

- पारिस्थितिकी और समाज
- पर्यावरणीय संकट एवं सामाजिक दायित्व।

इकाई-IV : पाश्चात्य सामाजिक विचारक **(24 पीरियड)**

- वर्ग संघर्ष- कार्ल मार्क्स
- श्रम विभाजन- इमाइल दुर्खीम
- नौकरशाही- मैक्स वेबर

इकाई-V : भारतीय समाजशास्त्री **(24 पीरियड)**

- प्रजाति एवं जाति- जी. एस. धुरिये
- परम्परा एवं परिवर्तन- डी. पी. मुखर्जी
- राज्य- ए. आर. देसाई
- ग्रामीण भारत- एम. एन. श्रीनिवास

✣

<u>अनुमोदित पुस्तकों के नाम–</u>

1. **समाजशास्त्र का परिचय–** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।
2. **समाज का बोध–** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।

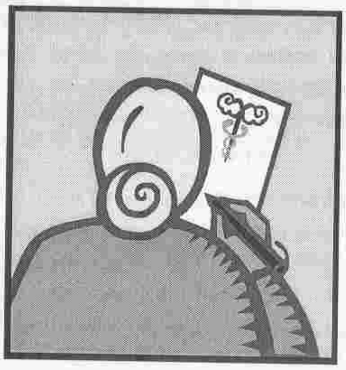

मनोविज्ञान

Class-XI

प्रस्तावना-

वर्त्तमान स्वरूप +2 स्तर पर मनोविज्ञान का पाठ्यक्रम तैयार किया जा रहा है। मनोविज्ञान को एक आवश्यक विषय के रूप में स्कूल शिक्षा में शामिल किया जाना चाहिए ताकि बच्चे जो राष्ट्र के भविष्य हैं अपने शिक्षण में मनोवैज्ञानिक तथ्यों, एवं सिद्धांतों को लागू कर शिक्षण को अति सहज बना सकें।

वर्त्तमान परिवेश में यह पाठ्यक्रम काफी सराहनीय है। नित्य नए शोधों एवं तथ्यों को इस पाठ्यक्रम में समाविष्ट करने की कोशिश की गई है। मनोविज्ञान की विषय-वस्तु, विधियों, सिद्धांतों का अध्ययन कर हमारे बच्चे अपने सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों को अच्छी तरह विकसित कर सकते हैं।

वर्त्तमान पाठ्यक्रम में मनोवैज्ञानिक रूचि मापन, मनोवृत्ति मापन, व्यक्तित्व मापन, बुद्धि मापन को शामिल किया गया ताकि वर्ग में हर श्रेणी के बच्चों के रूचि, बुद्धि, मनोवृत्ति को समझकर उसके अनुरूप शिक्षा दी जा सके। पाठन-पाठन सामग्री को लचीला एवं रूचिप्रद बनाकर बच्चों को रचनात्मक बनाने की कोशिश की गई हैं।

मनोविज्ञान शिक्षण विधियाँ मूल रूप से केस अध्ययन, प्रयोगात्मक अध्ययन, दिन प्रतिदिन के अभ्यास पर आधारित हैं।

उद्देश्य–

1. वर्त्तमान सामाजिक वातावरण के अनुरूप शिक्षार्थी के व्यवहार एवं मन का विकास करना एवं प्रोत्साहित करना।
2. शिक्षार्थी में मनोवैज्ञानिक ज्ञान का विकास करना ताकि वह जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासनात्मक ढंग से इसका उपयोग कर सके।
3. शिक्षार्थी में सामाजिक जागरूकता, आत्मदर्शन, स्पष्ट प्रत्यक्षण की भावना का विकास करना।
4. बच्चे जो कल के भविष्य हैं, उसमें राष्ट्रीयता की भावना, राष्ट्र की उत्तरदायित्व, प्रभावशाली व्यक्तित्व का विकास करना।

पाठ्यक्रम संरचना

Class-XI

पत्र : एक — समय : 3 घंटे — कुल अंक : 70

इकाई		अंक
मनोविज्ञान का आधार		
इकाई-I	मनोविज्ञान का परिचय	08
इकाई-II	मनोविज्ञान की जांच विधि	09
इकाई-III	मानव व्यवहार के आधार	08
इकाई-IV	मानव विकास	07
इकाई-V	संवेदी एवं प्रायक्षिक प्रक्रियाएँ	08
इकाई-VI	अधिगम	08
इकाई-VII	मानव स्मृति	08
इकाई-VIII	भाषा और चिंतन	07
इकाई-IX	अभिप्रेरण एवं संवेग	07
		70
	प्रायोगिक (योजना निर्माण, परीक्षण एवं लघु अध्ययन)	30
	कुल	100

मनोविज्ञान का आधार– (90 पीरियड)

इकाई-I : मनोविज्ञान क्या है ? (16 पीरियड)

इस भाग का उद्देश्य है मनोविज्ञान की उत्पत्ति में समझदारी एवं अभिरुचि का विकास करना एवं इसकी उत्पत्ति, इसके अनुप्रयोग तथा इसका दूसरे विज्ञान से संबंधों को सटीक एवं दिलचस्प उदाहरणों एवं दैनिक जीवन के अनुभवों के विश्लेषणों के समझ को विकसित करना।

मनोविज्ञान क्या है ? मनोविज्ञान विद्या शाखा की प्रसिद्ध धारणाएँ, मन एवं व्यवहार की समझ, मनोविज्ञान का विकास, मनोविज्ञान की शाखाएँ, अनुसंधान एवं अनुप्रयोग के कथ्य, मनोविज्ञान एवं अन्य विधा शाखाएँ, कार्यरत् मनोविज्ञान, दैनंदिन जीवन में मनोविज्ञान, भारत में मनोविज्ञान का विकास।

इकाई-II : मनोविज्ञान में जांच की विधियाँ (20 पीरियड)

इस इकाई का उद्देश्य विभिन्न विधियों की जांच करना ताकि मनोवैज्ञानिक आंकड़े एकत्रित किये जा सके, मनोवैनिक जांच के लक्ष्य, मनोवैज्ञानिक आंकड़ों की प्रवृत्ति, मनोविज्ञान की कुछ महत्वपूर्ण विधियाँ- प्रेक्षण विधि, प्रयोगात्मक विधि, सह-संबंधात्मक अनुसंधान, सर्वेक्षण अनुसंधान, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, केस अध्ययन, आंकड़ों का विश्लेषण, मनोवैज्ञानिक परीक्षण की सीमाएँ, नैतिक मुद्दे।

इकाई-III : मानव व्यवहार के आधार (20 पीरियड)

इस इकाई का उद्देश्य मानव व्यवहार पर पड़ने वाले जैविक एवं सामाजिक सांस्कृतिक प्रभावों पर प्रकाश डालना है। विकासवादी परिप्रेक्ष्य, जैविकीय आधार : जैविकीय एवं सांस्कृतिक भूल, व्यवहार के जैविकीय आधार, तंत्रिका तंत्र एवं अंत:स्रावी तंत्र की संरचना एवं प्रकार्य तथा व्यवहार और अनुभव के साथ उनके संबंध, मस्तिष्क और व्यवहार, आनुवंशिकता, जीन एवं व्यवहार, सांस्कृतिक आधार- व्यवहार का सामाजिक सांस्कृतिक निरूपण (उदाहरण- परिवार, सामुदायिक आस्था, लिंग, जाति, अशक्तता आदि), समाजीकरण, परसंस्कृतिकरण।

मनोविज्ञान

इकाई-IV : मानव विकास (16 पीरियड)

इस इकाई का उद्देश्य जीवन काल के दौरान विकास की विविध अवस्थाओं को मनोवैज्ञानिक ढंग से समझना है। विकास का अर्थ, विकास को प्रभावित करनेवाले कारक, विकास का संदर्भ, विकासात्मक अवस्थाओं की समग्र दृष्टि, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था की चुनौतियां, प्रौढ़ावस्था एवं वृद्धावस्था।

इकाई-V : संवेदी, अवधानिक एवं प्रायक्षिक प्रक्रियाएँ (20 पीरियड)

इस इकाई का उद्देश्य है कि विभिन्न संवेदी उद्दीपन कैसे ग्रहण किये जाते हैं, ध्यान में लाये जाते हैं और समझे जाते हैं। जगत का ज्ञान, उद्दीपन का स्वरूप एवं विविधता, संवेदना प्रकारताएँ, चाक्षुस संवेदन, श्रवण संवेदना, आवधानिक प्रक्रियाएँ- चयनात्मक अवधान, संधृत अवधान, प्रात्याक्षिक प्रक्रियाएँ- प्रत्यक्षण के प्रक्रमण उपागम, प्रत्यक्षणकर्ता- प्रात्यक्षिक सँगठन के सिद्धांत, स्थान, गहनता तथा दूरी प्रत्यक्षण, प्रात्यक्षिक स्थैर्य, भ्रम, प्रत्यक्षण पर सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव।

इकाई-VI : अधिगम (20 पीरियड)

इस इकाई का उद्देश्य है कि कोई कैसे नये व्यवहारों को अपनाता है और किस तरह से व्यवहार में परिवर्तन होता है, अधिगम का स्वरूप, अधिगम के प्रतिमान, प्राचीन अनुबंधन, प्राचीन अनुबंधन के निर्धारण, क्रिया प्रसूता, नैमितिक अनुबंधन, क्रिया प्रसूत अनुबंधन के निर्धारक प्रमुख अधिगम प्रक्रियायें, प्रेक्षणात्मक अधिगम 'संज्ञानात्मक अधिगम, संप्रत्यय अधिगम, कौशल अधिगम, अधिगम अंतरण, अधिगम को सुगम बनाने वाले कारक, अधिगमकर्त्ता, अधिगम शैलियां, अधिगम अशक्तताएं, अधिगम सिद्धांतों के अनुप्रयोग।

इकाई-VII : मानव स्मृति (20 पीरियड)

इस इकाई का उद्देश्य सूचनाओं का ग्रहण, संग्रहण, स्मृतिक्षय एवं स्मृति को उन्नत बनाने की व्याख्या करना है। स्मृति का स्वरूप- सूचना प्रकरण उपागम के अवस्था मॉडल– स्मृति तंत्र, संवेदी, अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक स्मृतियां, प्रकमण स्तर, दीर्घकालिक स्मृति के प्रकार, घोषणात्मक एवं प्रक्रिया मूलक, घटनापरक एवं आर्थिक स्मृति में ज्ञान का संगठन एवं प्रतिनिधान- स्मृति निर्माण, स्मृति एक रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में, विस्मरण के स्वरूप एवं कारण, चिन्ह ह्रास, अवरोध एवं पुनरुद्धार की असफलता के कारण, विस्मरण स्मृति वृद्धि : प्रतिभाओं के उपयोग से स्मृति-सहायक संकेत, संगठन के उपयोग से स्मृति सहायक संकेत।

इकाई-VIII : भाषा और चिंतन (20 पीरियड)

इस इकाई का उद्देश्य चिंतन और उससे संबंधित प्रक्रियाओं, जैसे- तर्क, समस्या समाधान, निर्णय लेने की क्षमता तथा रचनात्मक चिंतन की क्षमता की व्याख्या करना है। इसमें चिंतन एवं भाषा के बीच के संबंधों पर भी परिचर्चा होगी। चिंतन का स्वरूप, चिंतन के आधारभूत तत्व, चिंतन की प्रक्रिया, समस्या समाधान, तर्क, निर्णयन, सर्जनात्मक चिंतन का स्वरूप एवं प्रक्रिया सर्जनात्मक चिंतन के उपाय, विचार एवं भाषण, भाषा एवं भाषा के उपयोग का विकास।

इकाई-IX : अभिप्रेरणा एवं संवेग (18 पीरियड)

इस इकाई का उद्देश्य है कि किस तरह मानव व्यवहार करते हैं ? यह इसकी भी व्याख्या करता है कि किस तरह लोग सकारात्मक एवं नकारात्मक घटनाओं का अनुभव करते हैं और उसके प्रति प्रतिक्रिया देते हैं ? अभिप्रेरणा का स्वरूप, अभिप्रेरकों के प्रकार, जैविक अभिप्रेरण, मनोसामाजिक अभिप्रेरक, मैस्लो का आवश्यकता पदानुक्रम, संवेगों का स्वरूप, संवेगों के शरीर क्रियात्मक आधार, संवेगों के संज्ञानात्मक आधार, संवेगों के सांस्कृतिक आधार, संवेगों की अभिव्यक्ति, संस्कृति एवं संवेगात्मक अभिव्यक्ति, संस्कृति एवं संवेगों का नामकरण, निषेधात्मक संवेगों का प्रबंधन, विध्यात्मक संवेगों में वृद्धि।

मनोविज्ञान : प्रायोगिक कार्य

(योजना निर्माण, परीक्षण एवं लघु अध्ययन आदि)

समय : 3 घंटे **कुल अंक : 30**

* प्रयोग और परीक्षण द्वारा शिक्षार्थियों में तार्किक एवं रचनात्मक क्षमता का विकास करना।
* शिक्षार्थी एक प्रोजेक्ट लेंगे और उस पर तीन प्रयोग करेंगे। पाठ्यक्रम के विषय (मानव विकास, अधिगम, स्मृति, अभिप्रेरण, ध्यान, चिंतन आदि) पर लघु अध्ययन और परीक्षण करना है।

(क) प्रोजेक्ट वर्क पर रिपोर्ट - 5 अंक

(ख) मौखिकी - 5 अंक

(ग) दो प्रयोग - 10 अंक प्रत्येक पर

अनुमोदित पुस्तकों के नाम–

1. **मनोविज्ञान–** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।

दर्शनशास्त्र

Class-XI

उद्देश्य–

''दर्शन जीवन-जगत के स्वरूप को उसकी संपूर्णता में समझने का निष्पक्ष बौद्धिक प्रयास है।'' विवेकशील प्राणी होने के कारण 'ज्ञान से प्रेम' मनुष्य का जन्मजात गुण है। दर्शन सभी ज्ञान-विज्ञान की जननी मानी जाती है क्योंकि विज्ञान का आरंभ ज्ञान से होता है। दर्शन का स्वरूप और विषय इतना सूक्ष्म है कि उसके सिद्धांतों की आलोचना होती रहती है। तर्क-वितर्क के आधार पर इसके सिद्धांतों के पक्ष या विपक्ष में विचारक आते हैं। विज्ञान जिन पूर्व-मान्यताओं और स्वयंसिद्धों को सत्य मानकर अपनी खोज आगे बढ़ाता है, उन्हें ही दर्शन समझने का प्रयास करता है। दर्शन के कुछ मौलिक प्रश्न हैं, जैसे– **जगत् क्यों है ? कैसे है ? जीवन क्या है ? क्यों है ? कैसा होना चाहिए ? ईश्वर है या नहीं है? है तो कैसा है ? ज्ञान क्या है ? इसके साधन क्या हैं ?** दर्शनशास्त्र +2 पाठ्यक्रम का उद्देश्य है– शिक्षार्थियों को तर्कशास्त्र, नैतिक शास्त्र, पारम्परिक भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन के समस्याओं की प्रकृति को समझाना।

पाठ्यक्रम संरचना

Class-XI

पत्र : एक | समय : 3 घंटे | कुल अंक : 100

इकाई		अंक
A. वैज्ञानिक प्रविधि		
इकाई-I	प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञान की प्रविधियाँ	10
इकाई-II	प्रेक्षण एवं प्रयोग	10
इकाई-III	विज्ञान और प्राक्कल्पना	10
इकाई-IV	मिल्स की प्रायोगिक जांच की विधियां	10
इकाई-V	ज्ञान का न्याय सिद्धांत (सामान्य सर्वेक्षण)	10
B. तर्कशास्त्र		
इकाई-VI	तर्कशास्त्र की प्रकृति एवं विषय-क्षेत्र	06
इकाई-VII	पद एवं तर्क वाक्य एवं तार्किक वाक्यों के बीच संबंध	15
इकाई-VIII	निरपेक्ष न्याय	10
इकाई-IX	प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के तत्व	06
इकाई-X	बौद्ध औपचारिक तर्कशास्त्र	13
	कुल	100

वैज्ञानिक प्रविधि

इकाई-I : प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञान की प्रविधियाँ (20 पीरियड)

विज्ञान का मूल्य, वैज्ञानिक विधियों की प्रकृति एवं लक्ष्य, वैज्ञानिक आगमन के बीच अंतर और साधारण गणना द्वारा आगमन, प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान की विधियों में अंतर।

इकाई-II : प्रेक्षण एवं प्रयोग (20 पीरियड)

उनके बीच की असमानता, प्रेक्षण का तर्काभाष।

इकाई-III : विज्ञान और प्राक्कल्पना (25 पीरियड)

प्राक्कल्पना का वैज्ञानिक प्रविधियों में स्थान, प्रासंगिक प्राक्कल्पना का निर्माण, वैध परिकल्पना की औपचारिक अवस्था, परिकल्पना एवं निर्णायक प्रयोग।

इकाई-IV : मिल्स की प्रायोगिक जांच की विधियाँ (25 पीरियड)

* अन्वय की विधि
* व्यतिरेक की विधि

* अनव्य और व्यतिरेक की संयुक्त विधि
* सहगामी रूपांतरण की विधि
* अधिशेष की विधि

इकाई-V : ज्ञान का न्याय सिद्धांत (30 पीरियड)

सामान्य सर्वेक्षण- प्रमा, प्रमाण, प्रमन्या, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान शब्द।

तर्कशास्त्र

इकाई-VI : तर्कशास्त्र की प्रकृति एवं विषय क्षेत्र (14 पीरियड)

तर्कशास्त्र क्या है ? तर्कशास्त्र के उपयोग एवं प्रासंगिकता, सत्यता एवं वैद्यता में अंतर।

इकाई-VII : पद एवं तर्कवाक्य (30 पीरियड)

पद की परिभाषा, पदों की वस्तुवाचकता एवं स्वभाववाचकता, तार्किक वाक्य की परिभाषा, तार्किक वाक्य का पारम्परिक वर्गीकरण, पदों का वितरण, तार्किक वाक्यों के बीच संबंध, तार्किक वाक्यों का पारम्परिक वर्ग।

इकाई-VIII : निरपेक्ष न्याय (24 पीरियड)

परिभाषा, निरपेक्ष न्याय के नियम एवं दोष।

इकाई-IX : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के तत्व (14 पीरियड)

तर्कशास्त्र में प्रतीक के प्रयोग का मूल्य, मूल सत्यता सारणी।

इकाई-X : बौद्ध औपचारिक तर्कशास्त्र (26 पीरियड)

गृह-विज्ञान

Class-XI

औचित्य :

गृह विज्ञान एक विषय के रूप में शिक्षार्थियों को चार विभिन्न क्षेत्रों को समझने योग्य बनाता है। ये हैं–

1. भोजन और पोषण
2. मानवीय विकास
3. सामुदायिक प्रवंधन और प्रसार के स्रोत एवं
4. कपड़े (धागे) एवं वस्त्र-विज्ञान।

यह विषय शिक्षार्थियों को भारतीय समाज अध्ययन संबंधी सिद्धांतों एवं इसके साथ व्यावसायिक कुशलता की बदलती आवश्यकताओं के समझने योग्य बनाता है। यह विज्ञान इन्हें सक्षम बनायेगा ताकि वे एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में उभकर चुनौतियों का सामना कर सकें।

उद्देश्य :

उच्च माध्यमिक स्तर पर इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य गृह विज्ञान के माध्यम से स्वंय छात्र, परिवार एवं समुदाय में ज्ञान एवं समझ एवं कौशल का विकास करना है। इसका प्रयास है–

1. मानव विकास के आधारभूत तत्व तथा साथ विशेष चर्चा स्वंय एवं शिशु के संबंधों से छात्रों का परिचय कराना।
2. विभिन्न स्त्रोतों का न्यायोचित प्रबंधन हेतु विकास करना।
3. शिक्षार्थी को एक सजग उपभोक्ता बनने के लिए क्षमता उत्पन्न करना।
4. रोगों के प्रबंधन और रोक-थाम संबंधी पोषण एवं जीवनशैली को ज्ञान प्रदान करना।
5. स्वस्थ भोजन की आदत जागृत करना।
6. वस्त्र के रख-रखाव एवं चयन के लिए कपड़ों की समझ का विकास करना।
7. समुदाय में ज्ञान के प्रसार एवं बढ़ावा देने के लिए वार्तालाप का विकास करना।

पाठ्यक्रम संरचना

Class-XI (सैद्धांतिक)

पत्र : एक | समय : 3 घंटे | कुल अंक : 70

इकाई		अंक
इकाई-I	गृह-विज्ञान की अवधारणा	02
इकाई-II	अपने को जानें	17
इकाई-III	पोषण स्वयं और परिवार के लिए	17
इकाई-IV	अपने संसाधन	17
इकाई-V	अपनी पोशाक	17
	कुल	70

इकाई-I : गृह-विज्ञान की अवधारणा एवं इसके विषय क्षेत्र

- गृह-विज्ञान एवं इसके विषय क्षेत्र। **(02 पीरियड)**

इकाई-II :

- **किशोरावस्था-** अर्थ, प्रारंभिक (12-15 वर्ष) एवं उत्तरावस्था (16-18 वर्ष) किशोरावस्था, प्रारंभिक एवं उत्तरपरिपक्वता। **(33 पीरियड)**
- **लक्षण-** ज्ञान संबंधी विकास, सुदृढ़ से औपचारिक प्रक्रिया का संक्रमण, शारीरिक विकास, बुद्धि उद्यम, लैंगिक विकास, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास, समान वर्ग की महत्ता, विपरीत लिंग में दिलचस्पी, विविध एवं परिवर्तित दिलचस्पी, भविष्य के प्रति सजगता, किशोरावस्था दबाव एवं पीड़ा की एक अवस्था।
- **महत्वपूर्ण विकासात्मक कार्य–** किसी के शारीरिक बनावट को स्वीकारना, दोनों लिंगों के साथियों के साथ नवीन एवं अधिक परिपक्वता प्राप्त करना, स्त्री/पुरुष सामाजिक लिंगों को प्राप्त करना, अभिभावक से भावनात्मक स्वतंत्रता हासिल करना, भविष्य के लिए तैयारी, प्रजननिक स्वास्थ्य एवं रक्तअल्पता से सुरक्षा।
- **व्यक्तिक अलगाव–** समान लिंगों में विरोध, दो लिंगों के बीच विरोध, आरंभिक एवं उत्तर परिपक्वता, आनुवांशिकी एवं पर्यावरण की भूमिका (परिवार, समान वर्ग, स्कूल एवं पड़ोस)।

इकाई-III :
इकाई-IV
इकाई-V

- **अन्तरवैयक्तिक दक्षता**– परिवार के साथ, समान वर्ग एवं समुदाय के सदस्यों के साथ किशोरावस्था की विशेष जरूरतें।
  (क) **पोषण की आवश्यकता**- गुणात्मक एवं परिमाणात्मक।
  (ख) मनोरंजन एवं कार्य, शारीरिक क्रिया का सामाजिक विकास में उपयोग एवं मोटापे से सुरक्षा।
  (ग) **अभिभावकों के परामर्श।**
- **किशोरावस्था की कुछ समस्यायें**– शारीरिक उद्यम के कारण भद्दापन, स्वतंत्रता एवं नियंत्रण, मानसिक दबाव, शराब, ड्रग एवं धूम्रपान, अपराध, यौन संबंधी समस्यायें, अनदेखी एवं बढ़ी हुई उत्सुकता, एच.आई.वी./एड्स से एवं अन्य यौन संबंधी बीमारियों से बचाव।
- **जनसंख्या शिक्षा**– अधिक जनसंख्या से जुड़ी समस्यायें, बालिका शिशु का तिरस्कार, कारण एवं सुरक्षा, वैधानिक एवं सामाजिक कानून, बालिका शिशु की स्थिति को सुधारने हेतु सरकारी प्रोत्साहन, बालक शिशु की इच्छा, छोटे परिवार का प्रचलन।

इकाई-III : पोषण स्वयं एवं परिवार के लिए **(45 पीरियड)**

- **भोजन, पोषण और स्वास्थ्य की परिभाषा एवं उनके बीच संबंध**– पोषक तत्व एवं कार्यों के आधार, भोजन का वर्गीकरण, गरीबी रेखा के आधार पर पोषण की स्थिति एवं कैलोरी सेवन।
- **भोजन के कार्य**– शारीरिक संरचना, ऊर्जादायक, संरक्षक, नियमित, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक, अच्छे स्वास्थ्य के लक्षण, शारीरिक प्रस्थिति, मनोवैज्ञानिक प्रस्थिति, मानसिक योग्यता, मरणशीलता एवं जीवंतता अधिकतम पोषण एवं बेहतर स्वास्थ्य हेतु भोजन का चयन, पोषक तत्वों की जानकारी, स्त्रोत, कार्य, कमी एवं सुरक्षा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, भोजन रेशे, विटामिन- 'ए', 'डी', 'बी$_1$' एवं 'बी$_2$' एवं विटामिन 'सी', खनिज-कैल्शियम, लोहा एवं आयोडीन, मूल भोजन समूह (आई.सी.एम.आर.) एवं उनका योगदान, संतुलित भोजन की अवधारणा, परिवार के लिए भोजन एवं पोषण की आवश्यकता (आई.सी.एम.आर. तालिका), भोजन के चयन को प्रभावित करनेवाले कारक, पारिवारिक भोजन की प्रथा, मीडिया, समूह में भोजन की उपलब्धता।
- **भोजन का सही चयन, निर्माण, पकाने और संग्रहण के द्वारा अधिकतम पोषक तत्व**– नष्ट होने वाले भोजन का चयन और संग्रहण, अर्द्ध-नाशक, अनाशक, सुविधा के अनुसार भोजन, नष्ट होने के कारण, गृह संबंधी संग्रहण एवं शीतलीकरण, प्रविधियों का संक्षिप्त परिचय, निर्जलीकरण, रासायनिक एवं गृह प्रतिरक्षक का इस्तेमाल, भोजन का निर्माण, भोजन बनाते समय पोषक तत्वों की ह्रास एवं उनकी न्यूनता, पकाना, पकाने का सिद्धांत।
- **पकाने के तरीके**– उबालना, भँपाना, प्रेशर कुकर में भोजन बनाना, अधिक एवं साधारण तलना, अर्द्ध उबालना, रोस्ट एवं ग्रिल करना, भोजन के पोषक तत्वों पर प्रभाव, पोषक तत्वों के अंकुरण को बढ़ावा देने के तरीके, किण्वन, बेहतर भोजन संयोजन एवं प्रबंधन।

इकाई-IV : अपने संसाधन : अर्थ एवं प्रकार **(36 पीरियड)**

- **मानवीय**- ज्ञान, दक्षता, समय, ऊर्जा एवं उद्देश्य।
- **भौतिक**– धन, सामग्री एवं सम्पत्ति।
- **सामुदायिक सुविधा**– विद्यालय, पार्क, अस्पताल, सड़कें, ट्रांसपोर्ट, जल, बिजली, ईंधन, संसाधनों को प्रबंधित करने की आवश्यकता, संसाधनों के संरक्षण के तरीके।
- **प्रबंधन**– प्रबंधन की जरूरत एवं अर्थ, प्रबंधन के चरण, योजना, संगठन, नियोजन, क्रियान्वयन एवं आकलन, प्रबंधन में निर्णय करना और उसकी भूमिका।
- **समय एवं प्रबंधन**– व्यवसाय के लिए समय और अवकाश की आवश्यकता और तरीके, कार्य साधारणीकरण, अर्थ एवं तरीके, घर पर क्रियाकलाप, सोना, पढ़ना, पकाना, खाना, नहाना, धोना, इन क्रियाकलापों के लिए मनोरंजनात्मक जरूरतें, इन केन्द्रों को आकर्षक बनाने के लिए रंगों एवं साधनों का उपयोग, घर के विभिन्न सदस्यों का गृह-प्रबंधन में भूमिका।
- **कार्य आचार नीति**– अर्थ एवं महत्ता, कार्य करने की जगह पर अनुशासन, समय पर पहुंचना, सीट पर बैठना, कार्य को जानना, नम्र भाषा का प्रयोग करना।

इकाई-V : अपनी पोशाक **(34 पीरियड)**

- **सूत विज्ञान : सूत के प्रकार**- प्राकृतिक, रूई, सिल्क एवं ऊनी।
- **मानव निर्मित**– शुद्ध रेयॉन, नाईलॉन एवं पालिएस्टर एवं ब्लैंड (टेरीकॉट, टेरीसिल्क, टेरीनुमा)।
- **सूत निर्माण : धागा निर्माण के मूल तरीके**– बुनना, यांत्रिक बुनावट, रासायनिक बुनावट, कातना, प्लेन, ढिल एवं सैटिन।
- **अन्य तरीके**– बुनना, बुनाई पर प्रभाव, वस्त्रों एवं उनके रख-रखाव।

परिष्करण–

- अर्थ एवं महत्ता : प्रकार– मूल, सफाई, ब्लीचिंग, स्टीच करना, टैन्टर करना।
- विशेष– सिकुड़न, नियंत्रण, वाटर-प्रूफिंग, रंगाई एवं छपाई।

गृह-विज्ञान (प्रायोगिक)

समय : 3 घंटे

कुल अंक : 30

इकाई		अंक
इकाई-I	गृह-विज्ञान की अवधारणा	.....
इकाई-II	अपने को जानें	.....
इकाई-III	पोषण स्वयं और परिवार के लिए	08
इकाई-IV	अपने संसाधन	08
इकाई-V	अपनी पोशाक	07
	(क) रिकॉर्ड	05
	(ख) मौखिकी	02
	कुल	30

इकाई-I : गृह-विज्ञान की अवधारणा (02 पीरियड)

इकाई-II : स्वंय को जानें- (08 पीरियड)

- किशोरावस्था से जुड़े पहलू
- **क्रियाकलाप-** स्वयं की शक्ति और कमजोरी को जांचे एवं परखें, अपने वर्ग में सहपाठियों एवं शिक्षकों के साथ उस पर चर्चा करें, अपनी क्षमता का अधिकतम उपयोग करने एवं अपनी कमजोरियों में सुधार लाने का निर्णय, अपने परिवार के अंदर समान वर्ग एवं समुदाय के सदस्यों के साथ अंत:क्रिया पर रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

इकाई-III : स्वंय एवं परिवार के लिए पोषण (28 पीरियड)

- **क्रियाकलाप-**
  1. अपने परिवार में बेहतर स्वास्थ्य के लक्षण को देखें।
  2. **खाद्य वर्ग के अनुसार-** स्थानीय बाजार में खाद्य-सामग्री की उपलब्धता पर एक लिस्ट तैयार करें।
  3. किस प्रकार विभिन्न खाद्य-सामग्री घर पर संग्रहित किए जाते हैं एवं उसकी गुणवत्ता के आकलन का प्रेक्षण करें। भोजन एवं नाश्ता में अधिकतम पोषक तत्वों को संरक्षित करने की दक्षता प्राप्त करें।
  4. **प्रायोगिक-** भोजन एवं नाश्ता बनायें।
  5. **प्रायोगिक-** भोजन संरक्षण के तरीके- जाम / स्कावश / अचार / चटनी / सीरप

इकाई-IV : अपने संसाधन (30 पीरियड)

- **क्रियाकलाप (प्रेक्षण)-** घर एवं पड़ोस में उपलब्ध संसाधनों का प्रेक्षण एवं सूचीकरण, सामुदायिक संसाधनों एवं उसके प्रबंधन की वृहत सूची तैयार करें, उसमें सुधार के उपाय बतायें।
- **क्रियाकलाप-** घर पर किसी एक के क्रियाकलापों का विश्लेषणात्मक आकलन करें, सुधार के सुझाव दें।
- **क्रियाकलाप-** दूसरों से आप क्यों सहायता लेंगे तथा इस पर एक वर्क प्लान तैयार करें।
- **प्रायोगिक-** फूल एवं गुलदस्ता सुसज्जीकरण, फर्श सुसज्जीकरण, काँच, पीतल, लोहा, एल्युमिनियम एवं प्लास्टिक के फर्श की सफाई एवं पॉलिश।

इकाई-V : अपनी पोशाक (24 पीरियड)

- **क्रियाकलाप-** कपड़ों के नमूने संग्रहित करें और उसके पहचानने के लक्षणों का अध्ययन करें।
- **क्रियाकलाप-** बुने हुए कपड़ों के सैम्पल इक्ट्ठा कर उन्हें पहचानें।
- **प्रायोगिक-** रंगों की प्रगाढ़ता के लिए बर्निंग टेस्ट, स्लीपेज टेस्ट, हियरिंग टोन करें।
- **प्रायोगिक-** रंगाई- साधारण एवं रंगीन छपाई, ब्लॉक का प्रयोग (अपने घर पर उपलब्ध) छोटे नमूने पर।

गणित

Class-XI

भूमिका–

विषय के विकास और समाज की दृष्टिगत जरूरतों के मद्देनजर गणित के पाठ्यक्रम में समय-समय पर बदलाव होता रहा है। उच्च माध्यमिक स्तर पर एक प्रादेशिक स्तर होता है जहाँ से शिक्षार्थी गणित के उच्च स्तरीय शिक्षण अथवा व्यावसायिक शिक्षण जैसे अभियांत्रिकी, भौतिकी, जैव वैज्ञानिकी, वाणिज्य या कम्प्यूटर अध्यवसाय की शुरूआत करते हैं। वर्त्तमान संशोधित पाठ्यक्रम एन.सी.एफ. 2005 और गणित शिक्षण के भ्रामिक समूह 2005 के दिशानिर्देशों के आधार पर तैयार किया गया है जो कि शिक्षार्थियों के दृष्टिगत आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होगा। गणित के पाठ्यक्रम का स्वरूप बिहार के उच्च माध्यमिक (+2 स्तरीय) के संशोधित पाठ्यक्रम को सी.बी.एस.ई. के समरूप कर दिया गया है।

सामान्य उद्देश्य–

उच्च माध्यमिक स्तर पर गणित को शिक्षण के व्यापक उद्देश्य शिक्षार्थियों को मदद् करता है–

- ज्ञान प्राप्ति एवं आलोचनात्मक समझ विकसित करने में, विशेषकर मूल अवधारणाओं, शब्दावलियों, सिद्धांत, संकेत एवं प्रक्रिया की समझ में अभिप्रेरण और प्रेक्षण द्वारा।
- जब भी किसी प्रश्नों का समाधान ढूंढे तो उसके कारणों के प्रवाह को महसूस करें।
- प्रश्नों के समाधान एक से अधिक तरीकों द्वारा अपने ज्ञान और दक्षता का प्रयोग करें।
- सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करें तथा तार्किकता का परिचय दें।
- संबंधित प्रतियोगिता में विषय के प्रति रूझान विकसित करें।
- दैनिक जीवन में गणित के प्रयोग के प्रति शिक्षार्थियों को समझाना।
- गणित को एक विषय के रूप में चयन हेतु शिक्षार्थियों में रूझान विकसित करना।
- राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता के प्रति जागरूकता विकसित करना, पर्यावरण संरक्षण, छोटे परिवार के मानदंड को बढ़ावा देना, सामाजिक व्यवधान को विनष्ट करना तथा लिंग रूझान को समाप्त करने के लिए योगदान देना है।
- महान गणितज्ञ का गणित के क्षेत्र में उनके योगदान के प्रति आदर और श्रद्धा प्रदर्शित करना।

पाठ्यक्रम संरचना

पत्र : एक | समय : 3 घंटे | कुल अंक : 100

इकाई	पाठ्यक्रम संरचना		पीरियड	अंक
1.	समुच्चय और फलन	–	12	29
2.	बीजगणित	–	06	37
3.	नियामक ज्यामिति	–	09	13
4.	कलनशास्त्र	–	18	06
5.	गणितीय तर्कशास्त्र	–	08	03
6.	सांख्यिकी और प्रायिकता	–	20	12
			कुल-	100

इकाई-I : समुच्चय और फलन **(12 पीरियड)**

1. **समुच्चय–** समुच्चय एवं उनका निरूपण, रिक्त समुच्चय परिमित एवं अपरिमित समुच्चय, समिक समुच्चय, उप-समुच्चय, वास्तविक संख्याओं के उपसमुच्चय और अन्तरालों का सारणिक निरूपण, शक्ति समुच्चय, समष्टि समुच्चय, वेन आरेख समुच्चय, सम्मिलन एवं सर्वनिष्ठ, समुच्चयों का अंतर, पूरक समुच्चय।
2. **संबंध और फलन–** **(14 पीरियड)**

क्रमिक युग्म, समुच्चयों का कार्तीय गुणन, दो निश्चित समुच्चयों के कार्तीय गुणन में सदस्यों की संख्या, वास्तविक संख्याओं

का स्वयं के साथ (R x R x R तक) कार्तीय गुणन, संबंध की परिभाषा, चित्रिय निरूपण, प्रान्त, सहप्रान्त और परिसर, एक समुच्चय का दूसरे के साथ विशेष संबंध फलन के रूप में, फलन का चित्रिय निरूपण, प्रांत, सहप्रान्त और परिसर, वास्तविक चरों का वास्तविक मान वाला फलन, इन फलनों का प्रांत और परिसर, अचर, तादात्मय, बहुपद, परिमेय, मापांक, Signum, महत्तम पूर्णांक फलन का आलेख निरूपण, फलनों का जोड़, घटाव, गुणा और भाग।

3. **त्रिकोणमितिय फलन–** **(18 पीरियड)**

धनात्मक और ऋणात्मक कोण, कोणों का रेडियन और डिग्री में मापन एवं एक-दूसरे में परिवर्तन, त्रिकोणमितिय फलनों की परिभाषा इकाई वृत्त की सहायता से, तादात्म्य की सत्यता $Sin^2x + Cos^2x = 1$ (x के सभी मानों के लिए), त्रिकोणमितिय फलन का चिन्ह और उनका आलेख निरूपण। Sin (x+y) और Cos (x+y) का Sinx, Siny, Cosx और Cosy के पदों में व्यक्त करना, निम्नलिखित तादात्म्य का मान प्राप्त करना–

$$\tan(x \pm y) = \frac{\tan x \pm \tan y}{1 \mp \tan x \tan y} \qquad \cot(x \pm y) = \frac{\cot x \cot y \mp 1}{\cot y \pm \cot x}$$

$$\sin x + \sin y = 2 \sin \frac{x+y}{2} \cos \frac{x-y}{2}$$

$$\cos x + \cos y = 2 \cos \frac{x+y}{2} \cos \frac{x-y}{2}$$

$$\sin x - \sin y = 2 \cos \frac{x+y}{2} \sin \frac{x-y}{2}$$

$$\cos x - \cos y = -2 \sin \frac{x+y}{2} . \sin \frac{x-y}{2}$$

Sin 2x, Cos2x, tan 2x, Sin3x, Cos3x और tan 3x से संबंधित तादात्म्य, त्रिकोणमितिय समीकरण $\sin\theta = \sin\alpha$, $\cos\theta = \cos\alpha$ और $\tan\theta = \tan\alpha$ के रूप का सामान्य हल। Sine और cosine सूत्र का प्रमाण एवं सरल अनुप्रयोग।

गणित

इकाई-II : बीजगणित **(06 पीरियड)**

1. **गणितीय आगमन का सिद्धांत–** आगमन द्वारा प्रमाण की प्रक्रिया, प्राकृत संख्याओं को वास्तविक संख्याओं का निम्न आगमन उप समुच्चय के रूप में, अनुप्रयोग की आवश्यकता, गणितीय आगमन का सिद्धांत और सरल प्रयोग।

2. **सम्मिश्र संख्याएँ और द्विघात समीकरण–** **(10 पीरियड)**

सम्मिश्र संख्याओं की जरूरत, प्रत्येक द्विघात समीकरण का हल नहीं निकालने पर $\sqrt{-1}$ की आवश्यकता, सम्मिश्र संख्याओं के बीजिय गुणों का संक्षिप्त परिचय, सम्मिश्र संख्याओं के बिन्दु के रूप में आर्गन सतह पर निरूपण और सम्मिश्र संख्याओं का ध्रुवीय निरूपण, बीजगणित का मूल प्रमेय, सम्मिश्र संख्या पद्धति में वर्ग समीकरणों का हल।

3. **रैखिक असमिकाएँ–** **(10 पीरियड)**

रैखिक असमिकाएँ, एकचर में रैखिक असमिकाओं का बीजगणितीय हल एवं संख्या रेखा पर उनका निरूपण, दो चरों में रैखिक असमिकाओं का ग्राफिय हल, दो चर वाले रैखिक असमिकाओं की संहति का ग्राफिय हल।

4. **संचय और क्रमचय–** **(12 पीरियड)**

गणन का मौलिक सिद्धांत, क्रमगुणक n, (n!) संचय और क्रमचय सूत्रों का अवकलन एवं उनका संबंध, सरल प्रयोग।

5. **द्विपद प्रमेय–** **(08 पीरियड)**

इतिहास, कथन एवं प्रमाण (सिर्फ धनात्मक पूर्णांक घात के लिए) पास्कल का त्रिभुज, द्विपद विस्तार का सामान्य एवं मध्य पद एवं उनका सरल प्रयोग।

6. **अनुक्रम और श्रेणी–** **(10 पीरियड)**

समानान्तर श्रेणी, समानान्तर माध्य, गुणोत्तर श्रेणी, गुणोत्तर श्रेणी के सामान्य पद, गुणोत्तर माध्य, समानान्तर माध्य, गुणोत्तर माध्य के बीच संबंध, विशेष श्रेणी $\Sigma n, \Sigma n^2$ और Σn^3 के n पदों का योग।

इकाई-III: नियामक ज्यामिति **(09 पीरियड)**

1. **सरल रेखाएँ–** सरल रेखा का ढाल और दो रेखाओं के बीच का कोण, रेखाओं के समीकरण का विभिन्न रूप, समानान्तर अक्ष, बिन्दु-ढाल रूप, ढाल-अन्तःखड रूप, दो-बिन्दु से होकर, अन्तःखंड रूप और अभिलम्ब रूप, रेखा को सामान्य समीकरण, दी गई रेखा से बिन्दु की दूरी।

2. **शंकु खण्ड–** (12 पीरियड)
शंकु का खण्ड, वृत्त, परवलन, दीर्घवृत्त, अतिपरवलय, एक बिन्दु, एक सरलरेखा, दो रेखाओं का प्रतिच्छेदन, शंकु खंड के उत्पादक के रूप में, परवलय, दीर्घवृत्त और अतिपरवलय का सरल गुण और प्रमाणिक समीकरण, वृत्त का प्रामाणिक समीकरण।

3. **त्रिविमिय ज्यामिति का परिचय–** (08 पीरियड)
नियामक अक्ष और त्रिविमिय नियामक, तल बिन्दु का नियामक, दो बिन्दु के बीच की दूरी और खण्ड-सूत्र।

इकाई-IV : कलन शास्त्र (18 पीरियड)

1. **सीमाएँ और अवकलन–** दूरी के फलन तथा ज्यामितीय संदर्भ में अवकलन, सीमांत की काल्पनिक परिकल्पना, अवकलन की परिभाषा तथा वक्र के स्पष्ट रेखा की ढ़ाल, विभिन्न अवकलनों के योग, फलनों के गुणन और अंतर बहुपदों तथा त्रिकोणमितीय फलनों के अवकलन।

इकाई-V : गणितीय तर्कशास्त्र (08 पीरियड)

1. कथन, मूल तार्किय संयुक्तक, (शब्द/मुहावरा), तर्कशास्त्र में वेन आरेख का अनुप्रयोग, नकारात्मक संक्रियाएँ, यौगिक कथन और उनकी नकारात्मकता, प्रमाणक की अवधारणाएँ एवं समझ 'यदि एवं केवल यदि', इम्प्लाइज 'वाई', 'और'/ 'या', 'और', 'या', 'सभी का' कथनों की प्रामाणिकता, विरोध, विलोम और विरूद्ध धनात्मक (contrapositive) कथनों में अंतर, सत्यता सारणी, पुनरूमित, द्विबद्धता, कथनों की बीजगणित, सरल प्रश्नों के हल में तर्कशास्त्र का अनुप्रयोग, सत्यापन के प्रकार, प्रत्यक्ष संबंध (Direct), विरूद्ध धनात्मक (contrapositive), विरोध से, विपरीत उदाहरणों से सवर्सत, द्विसवशर्त कथन, वैद्य यूनिट।

इकाई-VI : सांख्यिकी एवं प्रायिकता–

1. **सांख्यिकीय–** (10 पीरियड)
केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप और विवेचना, प्रसरण, माध्य विचलन, मानक विचलन (सामूहिक एवं असामूहिक आंकड़ा), समान माध्य किन्तु असमान प्रसरण एवं संयुक्त वितरण (विसरणों का) वाले बारम्बारता वितरण का विवेचन।

2. **प्रायिकता–** (10 पीरियड)
यादृच्छिक प्रयोग, परिणाम प्रतिदर्श समष्टि, घटनाओं का वेग, 'नहीं', 'और' अथवा 'या' घटनाएँ, सर्व समावेष्य घटनाएँ, परस्पर अनन्य घटनाएँ अभिगृहीतीय संबंध (पिछली कक्षाओं के संबंध में), घटनाओं की प्रायिकता, नहीं, और, या घटनाएँ।

✣

अनुमोदित पुस्तकों के नाम–

1. **गणित (भाग-1)** – एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित एवं बी.टी.बी.सी. (बिहार) द्वारा मुद्रित।

उच्च माध्यमिक (+2 स्तरीय) कक्षा-11वीं की पाठ्यपुस्तकें

(हिन्दी संस्करण)

कला की अनुमोदित पाठ्यपुस्तकें

1. **मनोविज्ञान** (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
2. **समाजशास्त्र :-**
   (i) समाज का बोध (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) समाजशास्त्र का परिचय (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
3. **इतिहास :-**
   (i) विश्व इतिहास के कुछ विषय (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
4. **राजनीतिशास्त्र :-**
   (i) भारत का संविधान और व्यवहार (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) राजनीतिक सिद्धांत (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
5. **भूगोल :-**
   (i) भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) भारत का भौतिक पर्यावरण (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) भूगोल में प्रयोगात्मक कार्य (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
9. **अर्थशास्त्र :-**
   (i) अर्थशास्त्र में सांख्यिकी (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (i) भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

विज्ञान की अनुमोदित पाठ्यपुस्तकें

1. **जीव विज्ञान** (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
2. **रसायनशास्त्र :-**
   (i) **रसायनशास्त्र** (भाग-1) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) **रसायनशास्त्र** (भाग-2) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
3. **भौतिकी :-**
   (i) **भौतिकी** (भाग-1) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) **भौतिकी** (भाग-2) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
6. **गणित** (भाग-1) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

वाणिज्य की अनुमोदित पाठ्यपुस्तकें

1. **लेखाशास्त्र :-**
   (i) **लेखाशास्त्र** (वित्तीय लेखांकन, भाग-1) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) **लेखाशास्त्र** (वित्तीय लेखांकन, भाग-2) (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
2. **व्यवसाय अध्ययन** (एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

नोटः- बी.टी.बी.सी. द्वारा मुद्रित उपरोक्त विषयों के अंग्रेजी संस्करण भी उपलब्ध हैं।

भाषा की अनुमोदित पाठ्यपुस्तकें

1. **हिन्दी :-**
   (i) दिगंत (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) हिन्दी भाषा और साहित्य की कथा (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) हिन्दी व्याकरण (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

2. **अंग्रेजी :-**
   (i) The Rainbow (Part - I) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) The story of English (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) English Grammar (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

3. **संस्कृत :-**
   (i) कौस्तुभः (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) संस्कृत भाषा और साहित्य की कथा (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) संस्कृत व्याकरण (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

3\. **मैथिली :-**
   (i) तिलकोर (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) मैथिली भाषा और साहित्य की कथा (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) मैथिली व्याकरण (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

4\. **भोजपुरी :-**
   (i) दुभीधान (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) भोजपुरी भाषा और साहित्य की कथा (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) भोजपुरी व्याकरण (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

5\. **मगही :-**
   (i) पाटली (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (ii) मगही भाषा और साहित्य की कथा (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)
   (iii) मगही व्याकरण (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

6\. **बांग्ला :-**
   (i) शतभिषा (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

7\. **उर्दू :-**
   (i) कहकँशां (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

8\. **अरबी :-** अलहदी कतुल अरबिया (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

9\. **फारसी :-** लालोगोहर (भाग-1) (एस.सी.इ.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार टेक्स्टबुक द्वारा मुद्रित)

© प्रकाशक :

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति
(उच्च माध्यमिक प्रभाग)
बुद्ध मार्ग, पटना-800001

Sole Printer & Sole Distributor

KANAK PRAKASHAN®
'RAGHUVANSHAM', PATNA-800023

Sales Office :
SHOP NO. 15, GROUND FLOOR, JANPARA HOUSE,
KHAZANCHI ROAD, PATNA-800004